श्रीनिग्रहाचार्य - विरचित

श्रीमहावतारस्तुतिः
श्रीत्रिपुराम्बाशाम्भवीमहाप्रपत्तिः

(हिन्दी अनुवाद सहित)

लेखक

श्रीभागवतानंद गुरु

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित

NOTION PRESS

NOTION PRESS

India. Singapore. Malaysia.

ISBN xxx-x-xxxxx-xx-x

First Published – 2020
Second Edition – 2021

श्रीनिग्रहाचार्य - विरचित

श्रीमहावतारस्तुतिः
श्रीत्रिपुराम्बाशाम्भवीमहाप्रपत्तिः

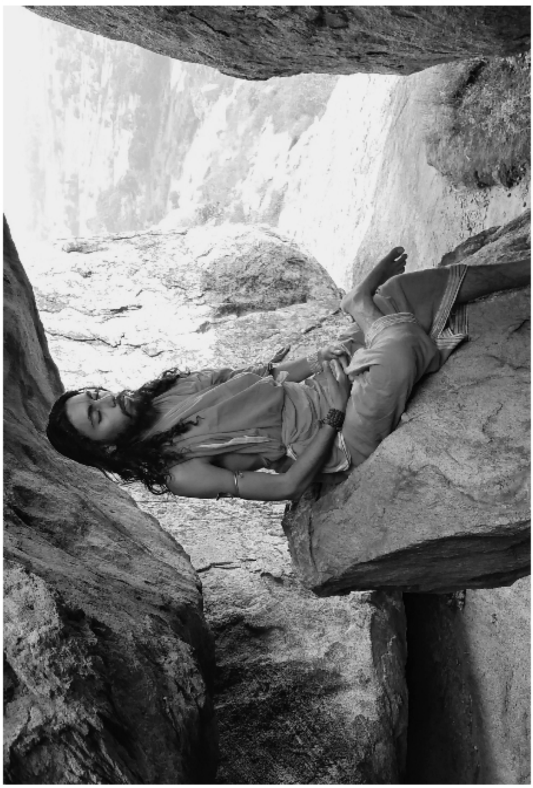
(हिन्दी अनुवाद सहित)

लेखक
श्रीभागवतानंद गुरु

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित
NOTION PRESS

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित

धर्मसंरक्षणार्थायाधर्मसंहारहेतवे । निग्रहाणाञ्च धर्माज्ञा लोके लोके प्रवर्द्धताम् ॥



श्रीमन्महामहिम विद्यामार्तण्ड श्रीभागवतानंद गुरु (श्रीनिग्रहाचार्य)

भूमिका

भगवान् के तत्त्व को जानना सामान्यों के वश की बात नहीं है। कोई जान भी गये हों, फिर उस अनुभव के बारे में वर्णन करना और भी कठिन कार्य है। सामान्य वर्णन कर भी लिया हो, पुनः उसका कवितात्मकता से पूर्ण छन्दोबद्ध प्रस्तुति करना इतोपि कठिन कार्य है पर किसी के द्वारा लिखी गयी कृति को देखकर यह लगना स्वाभाविक है कि प्रायः लेखन बहुत सरल कार्य है- जो इन महाशय ने इतनी सुगमता से कर ली है। निग्रहाचार्य श्रीभागवतानंद गुरु जी द्वारा लिखित महावतार स्तुति एवं त्रिपुराम्बाशाम्भवीमहाप्रपत्ति पढकर इसी बात का अनुभव होता है।

काव्यप्रकाश में मम्मटाचार्य कहते हैं कि शब्दालंकारों के प्रयोग से अवर स्तर की रचना बनती है और अर्थ व भाव का औन्नत्य ही किसी भी कृति को उत्तुंग बनाता है। शब्दों को पुनरावृत्त न करके पर्याप्त मात्रा में सुसंस्कृत पर्यायपदों का प्रयोग करना इस रचना को विशिष्टकोटि का बनाता है। हम नातिप्रौढ, नातिगभीर भाषा को पाते हैं, जो विद्वान् व पामरों को एक समान आनन्दित कर सकता है।

ध्यान देने योग्य बात है कि जहाँ वस्तु का वैविध्य है, *महावतारस्तुति* , वहाँ पर मात्र एक ही वृत्त का, और जहाँ वस्तु का एकत्व है- अर्थात् देवी सम्बन्धी *त्रिपुराम्बाशाम्भवीमहाप्रपत्ति* , वहाँ छंदस् का नानात्व कृति को आकर्षक और निराला बनाता है। इस रचना में सर्वत्र शक्ति का प्रसार अनुभूत होता है। शैलसुता वृत्त के सुन्दर लय में निबद्ध “महावतार स्तुति” कृति ओजःपूर्ण, प्रवाहशील, उत्साहजनक सुन्दर देवताभावों से सज्जित रचना है- जिसमें प्रायः

भगवान् विष्णु के सभी अवतार प्रस्तुत किये गये हैं। वासुदेव, सङ्कर्षण इत्यादि रूपों से आरंभ होकर मत्स्य, कपिल, दत्त, कल्कि तक के वर्णन इसमें हम पा सकते हैं। यथायोग्य अनुप्रास आदि अलंकारों के प्रयोग से सुशोभित हो रही यह रचना उपासकों के लिए विशेष प्रयोजनकारक है। विशेष देवता से संबद्ध अवतारकथा की घटनाओं के प्रस्ताव के साथ देवता की प्रशंसा पाठकों को कथा का भी ज्ञान कराने में सफल हो जाती है। इतने अवतारों का समग्र प्रस्तुति एकत्र पाना दुर्लभ ही है। अतः इन पद्यों को उन उन देवता को प्रसन्न करने के साधन के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं।

त्रिपुराम्बाशाम्भवी महाप्रपत्ति में देवी के प्रति भक्ति और समर्पण भाव अत्यंत श्लाघनीय है। इसे पढ़कर कोई देवी भक्तितत्त्व से बड़ी सरलता व सुगमता से अवगत हो सकता है। संस्कृत अज्ञों के लिए हिन्दी अनुवाद भी संग है, जो कृतकार ने स्वयं रचा है- अतः भावभंग या अर्थान्तर का कोई स्थान नहीं बचता। भक्ति, उपासना, तत्व, कथाघटना, शब्दविन्यास, अर्थगम्भीरता इत्यादि का एकत्रित रूप ही यह ग्रन्थ है। पाठक इसे पढ़कर अवश्य ही प्रमुदित होंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

शिवमस्तु

उषाराणी सङ्का

अधिकाश्वयुज-कृष्णनवमी, श्रीशार्वरी

(१० अक्टोबर, २०२०)

श्रीमहावतारस्तुतिः

हिन्दी अनुवाद सहित

वासुदेववर्णनम्

जय जय योगिजनोन्नतहस्तप्रणम्य कृपानिधिसंज्ञक हे
जय जय हे शरणागतवत्सल भक्तजनार्तिहरोत्सुक हे |
जय जय श्रीश महेशहृदिस्थित पन्नगतल्पविराजित हे
जय जय व्यूहपते वसुदेवकुलेशनताङ्घ्र उदग्रगते ||०१||

हे उठे हुए हाथों वाले योगियों के द्वारा प्रणम्य ! आपकी जय हो | आपकी कृपानिधि, ऐसी संज्ञा है | हे शरण में आये हुए लोगों के ऊपर स्नेह करने वाले ! हे भक्तजनों के कष्ट को हरण करने के लिए तत्पर ! आपकी जय हो | हे लक्ष्मी के स्वामी ! हे शिवजी के हृदय में निवास करने वाले ! हे सर्परूपी शय्या पर विराजमान होने वाले ! आपकी जय हो | हे चतुर्व्यूह के स्वामी ! वसुदेव के कुल के श्रेष्ठ जनों के द्वारा विनत चरणों वाले ! आप सदैव (सत्वबुद्धि के कारण) ऊर्ध्वगति को धारण करते हैं, आपकी जय हो |

प्रणवक्षमारविसत्यविभाण्डकगौरवशङ्करवर्णपदं
वाग्भवसंयुतकामिनीशङ्करकान्तकुलोज्ज्वलविघ्नहरम् |
स्वस्तिकसंयुतवाग्भवशङ्करकान्तयशस्करमन्त्रमिदं
जय जय व्यूहपते वसुदेवकुलेशनताङ्घ्रि उदग्रगते ||०२||

प्रणव (ॐकार), क्षमा (नकार), रवि (मकार), सत्य (ओकार), विभाण्डक (भकार), गौरव (गकार), शङ्कर (वकार), वाग्भव (एकार) से युक्त कामिनी (ते), शङ्कर एवं कान्त (वकार और आकार से मिश्रित वा), कुलोज्ज्वल (सकार), विघ्नहर/विघ्नहृत् (उकार), वाग्भव से युक्त स्वस्तिक (दे), शङ्करकान्त (वा) एवं यशस्कर (यकार), इस प्रकार *ॐ नमो भगवते वासुदेवाय* मन्त्र बनता है | हे चतुर्व्यूह के स्वामी (वासुदेव) ! वसुदेव के कुल के श्रेष्ठ जनों के द्वारा विनत चरणों वाले ! आप सदैव (सत्वबुद्धि के कारण) ऊर्ध्वगति को धारण करते हैं, आपकी जय हो |

जय जय मेघप्रभान्वित सुन्दरश्यामकलेवरधारक हे
श्वेतशिलामयतन्त्रसुगीतमतीवपरिष्कृतपूजित हे |
शङ्खरथाङ्गगदाब्जधरश्रुतिबाहुसमन्वित चर्चित हे
जय जय व्यूहपते वसुदेवकुलेशनताङ्घ्र उदग्रगते ||०३||

हे मेघ के समान प्रभा से युक्त ! सुन्दर श्यामवर्ण के शरीर को धारण करने वाले ! आपकी जय हो | (अथवा पांचरात्र आदि) तन्त्र में वर्णित अत्यंत निर्मल और पूजित श्वेतवर्ण की (स्फटिक) शिला के समान शरीर वाले ! हे (पाञ्चजन्य) शंख, (सुदर्शन) चक्र, (कौमोदकी) गदा एवं (अस्त्रालोक्य) पद्म को धारण करने वाले, चतुर्भुजरूप से युक्त प्रसिद्ध देव ! हे चतुर्व्यूह के स्वामी (वासुदेव) ! वसुदेव के कुल के श्रेष्ठ जनों के द्वारा विनत चरणों वाले ! आप सदैव (सत्वबुद्धि के कारण) ऊर्ध्वगति को धारण करते हैं, आपकी जय हो |

जय जय पौण्ड्रकदारक गुह्यनरेशविदारक तारक हे
जय जय विश्वप्रजेशसुपूजित याजकयज्ञफलप्रद हे |
भृगुतनयाश्रितवामविभाग मुनीश्वरवन्दितविग्रह हे
जय जय व्यूहपते वसुदेवकुलेशनताङ्घ्र उदग्रगते ||०४||

हे पौण्ड्रक को विदीर्ण करने वाले ! हे नरकासुर का संहार करने वाले ! हे उद्धार करने वाले ! आपकी जय हो | हे विश्व के प्रजापतियों के द्वारा पूजित ! हे उपासकों को यज्ञ का क्रतुफल प्रदान करने वाले ! लक्ष्मी जी ने जिनके वामभाग का आश्रय लिया है, श्रेष्ठ मुनियों के द्वारा जिनकी मूर्ति की वन्दना होती है, ऐसे हे चतुर्व्यूह के स्वामी (वासुदेव) ! वसुदेव के कुल के श्रेष्ठ जनों के द्वारा विनत चरणों वाले ! आप सदैव (सत्वबुद्धि के कारण) ऊर्ध्वगति को धारण करते हैं, आपकी जय हो |

सङ्कर्षणवर्णनम्

विश्वप्रकर्षण भक्तसुहर्षण क्लेशविकर्षण धूनक हे
दितिसुतघर्षणकारक माधवपत्स्य यमप्रतिभासक हे |
जय जय कल्पनिवारक शेष अशेष महीधर चक्रक हे
जय जय व्याल अनन्तकपाल करालमते फणिराजपते ||०५||

हे विश्व को आकर्षित करने वाले ! हे भक्तों को हर्षित करने वाले ! क्लेश का नाश करने वाले ! धूमयुक्त श्वास वाले ! हे यमराज के समान भयंकर ! हे लक्ष्मीपति विष्णु के निवास ! दैत्यों का मर्दन करने वाले ! संसार का संहार करने वाले ! हे ब्रह्मरूप से शेष रहने वाले शेष ! हे कुण्डली बनाकर बैठने वाले ! पृथ्वी को धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे विशाल सर्प शरीर को धारण करने वाले सर्पराज ! आप अनन्त मस्तकों से युक्त हैं, अथवा आप अनन्त ब्रह्माण्डों का पालन करने वाले हैं | हे कराल क्रोधबुद्धि को धारण करने वाले ! आपकी जय हो |

जय जय लम्बप्रलम्बप्रताडन धेनुकशासन मोदक हे
जय जय मर्कटबल्वलभोजकटाधिपमेघरवान्तक हे |
जय जय रेवतीकान्त प्रशान्त बिलङ्गम वारुणिशोषक हे
जय जय व्याल अनन्तकपाल करालमते फणिराजपते ||०६||

हे आनन्ददायक ! हे विशाल शरीर वाले प्रलम्बासुर को मारने वाले ! धेनुकासुर के ऊपर शासनपूर्वक नियंत्रण करने वाले ! आपकी जय हो | हे द्विविद वानर, बल्वल, रुक्मी एवं मेघनाद का संहार करने वाले ! आपकी जय हो | हे रेवती के स्वामी ! गम्भीर स्वभाव वाले ! हे भूविवर में निवास करने वाले ! वारुणी का पान करने वाले ! आपकी जय हो | हे विशाल सर्प शरीर को धारण करने वाले सर्पराज ! आप अनन्त मस्तकों से युक्त हैं, अथवा आप अनन्त ब्रह्माण्डों का पालन करने वाले हैं | हे कराल क्रोधबुद्धि को धारण करने वाले ! आपकी जय हो |

प्रणवरतीशकलिन्दसुतापदभेदनवेदविभक्तियुतं
सङ्कर्षणपदवेदविभक्तियुतं सुखदं मनसेप्सितदम् |
वह्निप्रियामनुचान्त्यपदे परिकीर्तितमस्ति पुरायतनं
जय जय व्याल अनन्तकपाल करालमते फणिराजपते ||०७||

सर्वप्रथम प्रणव (ॐकार), फिर रतीश (क्लीं), पुनः वेदविभक्ति (चतुर्थी विभक्ति) से युक्त भेदन के साथ कलिन्दपुत्री, इसके अनन्तर सुख एवं अभीष्ट को प्रदान करने वाला वेदविभक्ति से युक्त संकर्षण पद, सबसे अन्त में वह्निप्रिया को लगाने से प्राचीन अधिष्ठान वाले आपके मन्त्र का *ॐ क्लीं कालिन्दीभेदनाय सङ्कर्षणाय स्वाहा*, ऐसा स्वरूप कीर्तित है | हे विशाल सर्प शरीर को धारण करने वाले सर्पराज ! आप अनन्त मस्तकों से युक्त हैं, अथवा आप अनन्त ब्रह्माण्डों का पालन करने वाले हैं | हे कराल क्रोधबुद्धि को धारण करने वाले ! आपकी जय हो |

ज्ञानबलश्रुतिसंयुत राजसतामसभावप्रदर्शक हे
जय रघुराजयतीन्द्रपतञ्जलिनाथअचम्भकलाधिपते |
जय जय मूसलशङ्खगदाहलनीलसुवासनधारक हे
जय जय व्याल अनन्तकपाल करालमते फणिराजपते ||०८||

हे ब्रह्मज्ञान एवं वेदबल से युक्त ! हे राजस एवं तामस भाव का प्रदर्शन करने वाले ! हे लक्ष्मण, रामानुज, पतञ्जलि एवं अचम्भनाथ की अवतार कलाओं के स्वामी ! आपकी जय हो | हे मूसल, शंख, गदा, हल एवं नीलाम्बर को धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे विशाल सर्प शरीर को धारण करने वाले सर्पराज ! आप अनन्त मस्तकों से युक्त हैं, अथवा आप अनन्त ब्रह्माण्डों का पालन करने वाले हैं | हे कराल क्रोधबुद्धि को धारण करने वाले ! आपकी जय हो |

प्रद्युम्नवर्णनम्

जय जय रक्तवसनपरिमण्डित शम्भुसमाधिनिवारक हे
जय जय दिव्यप्रभावतीकान्त कृतान्तपराक्रम सुन्दर हे |
जय जय कामविलासनिवास सुहास यतीश्वरवन्दित हे
जय जय काम विदर्भसुतात्मज शम्बरकाल रतीश्वर हे ||०९||

हे लाल रंग के वस्त्रों को धारण करने वाले ! शिव जी की समाधि भंग करने वाले ! आपकी जय हो | हे दिव्य प्रभा वाली प्रभावती के पति ! यमराज के समान पराक्रमी ! सुन्दर शरीर धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे कामक्रीड़ा के अधिष्ठाता ! मधुर मुस्कान वाले ! यतीश्वरों के द्वारा वन्दित ! आपकी जय हो | हे काम ! रुक्मिणी के पुत्र ! हे शम्बरासुर का वध करने वाले ! देवी रति के स्वामी ! आपकी जय हो |

जय विमलाकृतिचन्द्रसुशीतलतान्वित मीनध्वजाधर हे
जय जय प्रीतिप्रद स्वजनानुजपोषक कामिनीमोषक हे |
जय वसुदेवकुलोत्तमयादवभूपशिरोमणिसंस्तुत हे
जय जय काम विदर्भसुतात्मज शम्बरकाल रतीश्वर हे ||१०||

हे पूर्णचन्द्र के समान उज्ज्वल एवं शीतल ! हे मीनचिह्न से युक्त ध्वजा को धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे प्रसन्नता को देने वाले ! अपने परिजन एवं अनुजों का पोषण करने वाले ! कामिनियों के चित्त को चुराने वाले ! आपकी जय हो | हे वसुदेव के कुल में उत्पन्न श्रेष्ठ यादवेश्वरों के द्वारा वन्दित ! आपकी जय हो | हे काम ! रुक्मिणी के पुत्र ! हे शम्बरासुर का वध करने वाले ! देवी रति के स्वामी ! आपकी जय हो |

श्रुतिमुखगर्जिनीक्लेशितसत्यसमन्वितशब्दपदम्प्रथमं
वैभवषड्वतुपन्वितवेदविभक्तिसमाश्रित पुण्यप्रदम् |
तव शुभनाम प्रदायककारकयुक्तकृतम्परिपूर्णमनुं
जय जय काम विदर्भसुतात्मज शम्बरकाल रतीश्वर हे ||११||

श्रुतिमुख (ॐकार), गर्जिनी (नकार), सत्य (ओकार) से युक्त क्लेशित (मकार) ऐसा पहला शब्दपद है | छः प्रकार के वैभवों को वतुप् एवं वेदविभक्ति (चतुर्थी) से युक्त करे, जो पुण्यप्रद होता है | फिर आपके शुभ नाम (प्रद्युम्न) को प्रदायक कारक (सम्प्रदान चतुर्थी) से युक्त करने पर *ॐ नमो भगवते प्रद्युम्नाय*, ऐसा परिपूर्ण मन्त्र बनता है | हे काम ! रुक्मिणी के पुत्र ! हे शम्बरासुर का वध करने वाले ! रति के स्वामी ! आपकी जय हो |

जय जय सत्यदृढाश्रव चापविशल्यधर प्रवदान्यवर
जय जय शोकविमुक्तिप्रद कृतिकीर्तित वल्भविहीन प्रभो |
जय जय निष्कुटकेलिप्रवीण परागचरित्रपरायण हे
जय जय काम विदर्भसुतात्मज शम्बरकाल रतीश्वर हे ||१२||

हे सत्य एवं दृढप्रतिज्ञ ! हे धनुष एवं बाण धारण करने वाले ! मधुर वचन बोलने वाले ! आपकी जय हो | हे शोक का निवारण करने वाले ! प्रसिद्ध कर्मों वाले ! छल कपट से रहित ! शासनशक्ति से सम्पन्न ! आपकी जय हो | हे अन्तःपुर की कामक्रीड़ा में निपुण ! विख्यात चरित्र वाले ! आपकी जय हो | हे काम ! रुक्मिणी के पुत्र ! हे शम्बरासुर का वध करने वाले ! देवी रति के स्वामी ! आपकी जय हो |

अनिरुद्धवर्णनम्

जय जय हे परिघायुधमारक विश्वविमोहन शोभन हे
जय जय कामसमुद्भव दैत्यनिषूदन यादवसैन्यपते |
जय द्रवयोधनदक्ष विपक्षविरुद्ध विशुद्धप्रभाश्रित हे
जय जय दैत्यपृषत्कसुताप्रियकान्त यशस्स्वनिरुद्ध प्रभो ||१३||

हे परिघ नामक आयुध से युद्ध में प्रहार करने वाले ! हे विश्व को मोहित करने वाले ! सुन्दर रूप को धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे कामदेव के पुत्र ! दैत्यों का संहार करने वाले ! यादवों की सेना के स्वामी ! आपकी जय हो | हे शीघ्रगति से युद्ध करने में कुशल ! विपक्षियों के विरुद्ध कर्म करने वाले ! विशुद्ध तेज से युक्त ! आपकी जय हो | हे बाणासुर की पुत्री के प्रिय स्वामी ! हे यश के क्षेत्र में रुद्ध न होने वाले अनिरुद्ध ! आपकी जय हो |

जय निरहङ्कृतिपूज्य पतङ्गसुशोभित पिङ्गप्रचेलनिभ
जय जय दिव्यपराङ्गवधारक प्रख्ययशस्कर पिङ्कगते |
जय जय हे शरणागतवत्सल पूरितवीर्यनियामक हे
जय जय दैत्यपृषत्कसुताप्रियकान्त यशस्वनिरुद्ध प्रभो ||१४||

हे विनम्र जनों के द्वारा पूजित ! चन्दन से सुशोभित ! पीतगौरप्रभा से युक्त ! आपकी जय हो | हे विशाल दिव्य शरीर को धारण करने वाले ! हे विख्यात यश को देने वाले ! युवा हाथी के समान चाल वाले ! आपकी जय हो | हे शरण में आये लोगों पर कृपा करने वाले ! भरे पूरे पराक्रम वालों पर भी शासन करने वाले ! आपकी जय हो | हे बाणासुर की पुत्री के प्रिय स्वामी ! हे यश के क्षेत्र में रुद्ध न होने वाले अनिरुद्ध ! आपकी जय हो |

जय भगमालिनिबिन्दुसमन्वितयुग्मजवर्तुलयोजित हे
जय सवितापदकालश्रुतिस्थितषड्गधारकवेदयुत |
जय अनिरुद्धचतुर्थगतस्सुचतुर्थगतस्तव मन्त्रमिदं
जय जय दैत्यपृषत्कसुताप्रियकान्त यशस्स्वनिरुद्ध प्रभो ||१५||

भगमालिनी से युक्त बिन्दु (आं), दो बार वर्तुल (ॐकार) वाले ! आपकी जय हो | सवितापद (नकार), श्रुति (ओकार) में स्थित काल (म), वेद (चतुर्थी) से युक्त षडैश्वर्य के धारक (भगवान्) ! आपकी जय हो | हे चतुर्व्यूह में चतुर्थ स्थान में स्थित अनिरुद्ध ! आपका अनिरुद्ध पद भी चतुर्थ (कारक) में जाकर आपके मन्त्र *आं ॐ ॐ नमो भगवते अनिरुद्धाय*, का निर्माण करता है | हे बाणासुर की पुत्री के प्रिय स्वामी ! हे यश के क्षेत्र में रुद्ध न होने वाले अनिरुद्ध ! आपकी जय हो |

जय गिरिजागुणकल्पित रक्षितप्राण विरोधिप्रकम्पन हे
जय बहुलापतिधर्मप्रभावप्रकाशक विष्णुपदस्थित हे |
जय जय माथुरवर्गव्यतिक्रमनाशक लोकदृगन्तभ हे
जय जय दैत्यपृषत्कसुताप्रियकान्त यशस्वनिरुद्ध प्रभो ||१६||

हे पार्वती के द्वारा कल्पित गुणों से युक्त ! पार्वती के द्वारा रक्षित प्राणों वाले ! विरोधियों को कम्पायमान करने वाले ! आपकी जय हो | हे सती बहुला[1] के पातिव्रत्य के प्रभाव को दिखाने वाले ! हे वैकुण्ठवासी ! आपकी जय हो | हे मथुरावासियों (कालान्तर में द्वारिकावासियों) के कष्टों का संहार करने वाले ! पुरवर्ग की आँखों के तारे (अत्यन्त प्रिय का लाक्षणिक भाव) ! आपकी जय हो | हे बाणासुर की पुत्री के प्रिय स्वामी ! हे यश के क्षेत्र में रुद्ध न होने वाले अनिरुद्ध ! आपकी जय हो |

---

1 पार्वती देवी ने उषा को बाल्यकाल में ही अनिरुद्ध के दिव्य गुणों का संकेत कर दिया था | उषा का पुनर्जन्म सती बहुला के रूप में हुआ था जिसमें उसके पति अनिरुद्ध लक्ष्मीन्द्र के नाम से अवतरित हुए थे | मनसा देवी के कोप से उनका प्राणांत हो गया था तब बहुला के पातिव्रत्य से प्रसन्न होकर शिव एवं पार्वती ने उनके पति को पुनर्जीवित कर दिया था, ऐसा अङ्ग-बङ्ग क्षेत्र के गारुडी एवं पन्नगी विद्या के साधकों के मध्य प्रसिद्ध है |

अन्तर्व्यूहविलासवर्णनम्

जय जय केशव माधव वारिसमाश्रितदेहशयानमते
जय जय स्वर्णप्रभासितश्यामप्रभेन्द्रसुनीलकलेवर हे |
जय जय चक्रचतुर्दरधारण वेदगदाधर व्यूहपते
जय भववारिधितारक कैटभमारक यामुनकेलिनिधे ||१७||

(वासुदेव के अन्तर्विलास) केशव, माधव एवं जल में शयन की रुचि रखने वाले नारायण की जय हो | स्वर्णप्रभा वाले केशव, श्यामप्रभा वाले नारायण एवं इन्द्रनील के समान वर्ण वाले हे माधव ! आपकी जय हो | अपनी चारों भुजाओं में चक्र धारण करने वाले केशव, शंख धारण करने वाले नारायण एवं चार गदाओं को धारण करने वाले व्यूहपति माधव की जय हो ! हे संसारसमुद्र से उद्धार करने वाले, कैटभ राक्षस का वध करने वाले, यमुना में क्रीडा करने वाले ! आपकी जय हो |

जय जय हे मधुसूदन विष्णुरतीश्वरधेनुप्रशंसित हे
जय जय वारिजवर्णपरागप्रभेन्दुसिताकृतिधारक हे |
जय जय मूसलभूमिविदारणशार्ङ्गधनुर्धर पाहि हरे
जय भववारिधितारक कैटभमारक यामुनकेलिनिधे ||१८||

(सङ्कर्षण के अन्तर्विलास) मधुसूदन, विष्णु एवं कामधेनु के द्वारा प्रशंसित हे गोविन्द ! आपकी जय हो | कमल के समान वर्ण वाले मधुसूदन, कमल के पराग के समान वर्ण वाले विष्णु एवं चन्द्रमा के समान गौर वर्ण वाले हे गोविन्द ! आपकी जय हो | अपनी चारों भुजाओं में मूसल को धारण करने वाले मधुसूदन, पृथ्वी को विदीर्ण करने वाला हल धारण करने वाले विष्णु एवं शार्ङ्ग धनुष को धारण करने वाले हे गोविन्द ! आपकी जय हो | हे दुःख का हरण करने वाले ! मेरी रक्षा करें | हे संसारसमुद्र से उद्धार करने वाले, कैटभ राक्षस का वध करने वाले, यमुना के जल में क्रीडा करने वाले ! आपकी जय हो |

जय जय श्रीधरसुन्दरवामनरूपत्रिविक्रम कामगते
जय जय पद्मप्रभेश्वरबालरविप्रभपावकवर्णपते |
जय जय पट्टिशवज्रपवित्रनिनादप्रकाशसुशोभित हे
जय भववारिधितारक कैटभमारक यामुनकेलिनिधे ||१९||

(प्रद्युम्न के अन्तर्विलास) श्रीधर, सुन्दर रूप याले वामन एवं इच्छानुसार कर्म करने वाले हे त्रिविक्रम ! आपकी जय हो | पद्म के समान प्रभा वाले श्रीधर, प्रातःकाल के सूर्य के समान प्रभा वाले वामन एवं अग्निवर्ण के स्वामी हे त्रिविक्रम ! आपकी जय हो | अपनी चारों भुजाओं में पट्टिश धारण करने वाले श्रीधर, चार वज्र धारण करने वाले वामन एवं पवित्र ध्वनि वाले शंख को धारण करने वाले हे त्रिविक्रम ! आपकी जय हो | हे संसारसमुद्र से उद्धार करने वाले, कैटभ राक्षस का वध करने वाले, यमुना के जल में क्रीडा करने वाले ! आपकी जय हो |

जय जय सेन्द्रियकान्तप्रवाहसमुद्भवनाभसुपाशित हे
जय जय हे तडिदाभदिवाकरसन्निभशक्रप्रभान्वित हे |
जय जय मुद्गरखड्गगदादरचापरथाङ्गसुपाशपते
जय भववारिधितारक कैटभमारक यामुनकेलिनिधे ||२०||

(अनिरुद्ध के अन्तर्विलास) इन्द्रियों के स्वामी हृषीकेश, पद्मनाभ एवं सुपाशित लीलाविग्रह वाले हे दामोदर ! आपकी जय हो | विद्युत् के समान वर्ण वाले हृषीकेश, सूर्य के समान प्रभा वाले पद्मनाभ एवं इन्द्रगोप के समान नीलाभ रक्तवर्ण वाले हे दामोदर ! आपकी जय हो | अपनी चारों भुजाओं में मुद्गर धारण करने वाले हृषीकेश, अपनी भुजाओं में खड्ग, गदा, शंख, चक्र तथा (पृष्ठभाग में) धनुष धारण करने वाले पद्मनाभ, अपनी चारों भुजाओं में सुन्दर पाश को धारण करने वाले हे दामोदर ! आपकी जय हो | हे संसारसमुद्र से उद्धार करने वाले, कैटभ राक्षस का वध करने वाले, यमुना के जल में क्रीडा करने वाले ! आपकी जय हो |

हंसवर्णनम्

जय जय साध्यगणस्तुत काल परात्परब्रह्मपदस्थित हे
जय जय मोहनिवारक शुद्ध शुभाकृतिवज्रप्रकाशगते |
जय जय खण्डितकर्मफल प्रकटीकृतपौरुषवर्णन हे
जय जय हंस प्रशस्तचरित्र विचित्रविवेकसमन्वित हे ||२१||

हे साध्यगण के द्वारा स्तुत ! कालस्वरूप ! परात्परब्रह्म के पद में स्थित ! आपकी जय हो | हे मोह का निवारण करने वाले ! शुद्ध ! हीरे के समान प्रकाश वाली शुभ आकृति से युक्त ! आपकी जय हो | हे कर्मफल का नाश करने वाले ! परमपुरुष के ज्ञान को प्रकाशित करने वाले ! आपकी जय हो | हे हंस ! आपका चरित्र प्रशस्त है | आप अद्भुत विवेक से युक्त हैं | आपकी जय हो |

जय जय वेदमुखान्वितमायिकबीजनभोमनुधारक हे
जय जय जीवविसर्गयुतेश्वरसत्यविखण्डनव्योमगते |
जय जय दक्षसुताग्निप्रियायुत चित्तप्रमोदनकारण हे
जय जय हंस प्रशस्तचरित्र विचित्रविवेकसमन्वित हे ||२२||

हे वेदमुख (ॐकार) से युक्त मायाबीज (ह्रीं) एवं आकाशमन्त्र (हं) को धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे विसर्ग से युक्त जीव (सः), ईश्वर (स) से युक्त सत्य (ओकार), विखण्डन (अवग्रह) एवं व्योमबीज (हं) की गति वाले! आपकी जय हो | दक्षपुत्री अग्निप्रिया (स्वाहा) से बने *ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा* संज्ञक मन्त्र वाले ! चित्त की प्रसन्नता के कारणभूत ! आपकी जय हो | हे हंस ! आपका चरित्र प्रशस्त है | आप अद्भुत विवेक से युक्त हैं | आपकी जय हो |

हयग्रीववर्णनम्

जय जय श्रीप्रदयोगविभूतिफलप्रद लोकनृपाभिनुत
जय जय हे हयग्रीवकृतान्तक कल्पविलोपनकारक हे |
जय जय हे मणिकूटगिरिस्थित भक्तयशोधनवाहक हे
जय जय हे तुरगानन वेदसमुद्धरकारण ज्ञानपते ||२३||

हे ऐश्वर्य को देने वाले योगजन्य सिद्धियों के फल के दाता ! आप लोकपालों के द्वारा प्रणम्य हैं | आपकी जय हो | हे हयग्रीव दैत्य को मारने वाले ! संसार-संहार के हेतुभूत ! आपकी जय हो | हे मणिकूट (यहीं हयग्रीववध हुआ था) पर्वत में स्थित ! भक्तों के यश रूपी धन का निर्वहन करने वाले ! आपकी जय हो | हे हयग्रीव ! आप वेदों का उद्धार करने वाले हैं | हे ज्ञान के स्वामी ! आपकी जय हो |

वर्तुलयुक्तहलन्तकलारसबिन्दुयवाकनिनादित हे
जय जय वारिधिस्वादुरसङ्कुरुयुग्मपराश्रितमानव हे |
जय श्रुतिपालक पातकदारक क्लेशनिवारक तारक हे
जय जय हे तुरगानन वेदसमुद्धरकारण ज्ञानपते ||२४||

हे वर्तुल (ॐकार) से युक्त, हलन्त वाले कलारस (ल्), बिन्दु एवं नाद (औ) वाले यवाक (ह) से युक्त ! आपकी जय हो | हे समुद्र के मधुर रस (अमृत), कुरुयुग्म और परा (स्वाहा) पर आश्रित मानव (*ॐ ल्हौं अमृतं कुरु कुरु स्वाहा*, ऐसे मन्त्रकलेवर वाले) ! आपकी जय हो | हे वेदों का पालन करने वाले ! पापों का नाश करने वाले ! कष्टों का निवारण एवं उद्धार करने वाले ! आपकी जय हो | हे हयग्रीव ! आप वेदों का उद्धार करने वाले हैं | हे ज्ञान के स्वामी ! आपकी जय हो |

कुमारवर्णनम्

जय जय पञ्चसमायुधर प्रथमोद्भव तापस चित्रगते
जय जय नारदशोकहुताशननाशसमापनवारिद हे |
जय जय विष्णुकपाटसुरक्षकशापप्रदायक तारक हे
जय जय हे सनकादिमुनीश्वर ब्रह्मसमुद्भव योगमणे ||२५||

हे पांच वर्ष की अवस्था को धारण करने वाले ! सबसे पहले उत्पन्न ! तपस्वी एवं अलक्षित स्वभाव वाले ! आपकी जय हो | हे नारद की शोकाग्नि के नाश की पूर्णता को निश्चित करने वाले बादल के समान ! आपकी जय हो | हे भगवान् विष्णु के द्वारपालों को शाप प्रदान करने वाले एवं उस श्राप से उनके उद्धार का मार्ग दिखाने वाले ! आपकी जय हो | हे मुनियों के स्वामी सनकादि ! ब्रह्माजी के द्वारा उत्पन्न ! योगबल से प्रकाशित मणिस्वरूप ! आपकी जय हो |

वाराहवर्णनम्

जय जय दामिनीकान्तिकलेवर दंष्ट्रमहीधर भूमिपते
जय जय दैत्यविमारक यज्ञतनूरुह ऋत्विजकारक हे ।
जय जय मानववंशविकाशकर त्रिदिवारिनिपातक हे
जय जय क्रोडतनो कनकाख्यविलोचनकाल धराधिपते ।।२६।।

हे विद्युत् के समान प्रकाशित शरीर वाले ! अपने दांतों में पृथ्वी धारण करने वाले ! भूदेवी के स्वामी ! आपकी जय हो । हे दैत्यों को मारने वाले, यज्ञमय स्वरूप वाले ! यज्ञ में ऋत्विजों को उत्पन्न करने वाले ! आपकी जय हो । हे मनु के वंश को (पृथ्वीसंस्थापन के द्वारा) विकसित करने वाले ! देवताओं के शत्रुओं का संहार करने वाले ! आपकी जय हो । हे वाराह का शरीर धारण करने वाले ! हिरण्याक्ष के मृत्युस्वरूप ! पृथ्वीपति ! आपकी जय हो ।

मत्स्यवर्णनम्

जय जय वेदप्रचारक कालसमुद्रसमुद्धरनायक हे
जय जय हे मनुभूपनमस्कृत वारिधियानतुरङ्गम हे |
जय जय शृङ्गप्रभद्र तिमिङ्गिलराज प्रजार्तितमोनुद हे
जय जय हे भवसागरकेलिनिधान विधाननियामक हे ||२७||

हे वेदों का प्रचार करने वाले ! प्रलयकालीन समुद्र से उद्धार करने वालों में अग्रणी ! आपकी जय हो | हे मनु महाराज के द्वारा नमस्कृत ! समुद्रयात्रा के यान (नौका) को ले जाने वाले अश्वरूप ! आपकी जय हो | हे सुंदर शृङ्ग से युक्त ! विशालतम मत्स्यों के स्वामी ! प्रजा के शोकरूपी अंधकार को दूर करने वाले ! आपकी जय हो | हे भवसागर में क्रीडा-विहार करने वाले ! सृष्टि के नियमों का निर्धारण-नियमन करने वाले ! आपकी जय हो |

कपिलवर्णनम्

जय जय कर्दमवंशयशस्कर दर्शननिस्वनवाचक हे
जय जय पञ्चविषादबहिष्कृत तत्त्वसमूहविहारमते |
मनुदुहिताभ्रमजालप्रतोटक साङ्ख्यनियोजक गत्वर हे
जय जय हे कपिलाख्य महाभुज शुद्धतपःप्रभ भूसुर हे ||२८||

हे कर्दम प्रजापति के वंश के यशस्वी बनाने वाले ! (सांख्य) दर्शन के वचनों का उपदेश करने वाले ! आपकी जय हो | हे पांच प्रकार के क्लेशों[2] से निर्मुक्त, तत्त्वसमूहों में विहार करने में रुचि रखने वाले ! आपकी जय हो | हे स्वायम्भुव मनु की पुत्री (देवहूति) के भ्रमजाल को तोड़ने वाले ! उनके मन को सांख्ययोग में लगाने वाले, निरन्तर भ्रमणशील ! आपकी जय हो | हे कपिल नाम वाले ! विशाल भुजाओं वाले ! शुद्ध तपस्या की प्रभा से युक्त ! पृथ्वी में देवतुल्य ! आपकी जय हो |

---

2 योगदर्शन के अनुसार अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश नाम के पांच क्लेश हैं जो ईश्वर पर अपना प्रभाव नहीं दिखा पाते |

दत्तवर्णनम्

जय जय हेऽत्र्यजिराभिललाम त्रिमस्तकसंयुत योगनिधे
जय जय श्वानद्विडावृत पातकरायण ध्यानपरायण हे |
जय जय सौम्यस्वरूप प्रशान्तमनस्क निशान्तकरप्रभ हे
जय जय दत्त महाजव भोगविरक्त कयुक्त विमुक्त हरे ||२९||

हे अत्रि मुनि के आंगन की शोभा बढाने वाले ! तीन मस्तकों से युक्त ! योग को अपना सर्वस्व धन समझने वाले ! आपकी जय हो | हे श्वान (कुत्ता) एवं गौ से घिरे हुए, पापों का नाश करने वाले, निरंतर ध्यान में लीन ! आपकी जय हो | हे सौम्य स्वरूप वाले ! शान्तचित्त वाले ! सूर्य के समान तेजोमय ! आपकी जय हो ! हे दत्तसंज्ञक देव ! मन की गति से विचरण करने वाले ! भोग विलास से विरक्त एवं ब्रह्मज्ञान से युक्त ! सभी द्वंद्वों से मुक्त ! आपकी जय हो |

पृथुवर्णनम्

जय जय मेदिनीशासक वैन्य प्रशासकवन्यमहाद्रुम हे
जय जय दण्डधराग्रप्रयाणकरार्तिहरोत्सुक विश्वपते |
जय जय चापकलम्बकृपाणसुवर्मकिरीटविभूषित हे
जय पृथुराज धराप्रतिपालक दुष्टविहिंसन संश्रय हे ||३०||

हे पृथ्वी पर शासन करने वाले ! वेनपुत्र ! राजाओं के वन में विशालकाय वृक्षरूप ! आपकी जय हो | हे दण्डधारियों के अग्रनायक ! कष्ट हरण के लिए सदैव तत्पर ! आपकी जय हो ! हे धनुष, बाण, तलवार, सुंदर कवच एवं मुकुट से सुशोभित ! आपकी जय हो | हे महाराज पृथु ! आप पृथ्वी की रक्षा और पालन करने वाले हैं, दुष्टों का संहार करते हैं ! आपकी जय हो |

ऋषभवर्णनम्

जय जय नाभिसुखप्रद निर्जरभूपसुताप्रिय योगगते
जय जय विप्रपदाम्बुजरक्त सुदीप्त क्षियाचरितान्वित हे |
जय जय साध्ववधूत पुरातन राज्यधराग्रपदस्थित हे
जय जगधामनिकर्षभ पीडितद्वन्द्व भगेश्वरचिन्त्य विभो ||३१||

हे महाराज नाभि को सुख प्रदान करने वाले ! स्वर्ग के स्वामी (इंद्र) की पुत्री के प्रिय ! योग में गति रखने वाले ! आपकी जय हो | हे ब्राह्मणों के चरण - कमलों की भक्ति करने वाले ! सुंदर प्रकाश से युक्त ! (अवधूत वृत्ति में रहने के कारण) लोकदृष्ट्या गर्हित चरित्र वाले ! आपकी जय हो | हे कल्याणकारी अवधूत ! अत्यंत प्राचीन स्थिति वाले ! राजाओं के समूह में अग्रणी ! आपकी जय हो | हे संसार की स्थिति हेतु उर्जाप्रवाह ! हे ऋषभ ! अपनी तपस्या से कष्टों को ही कष्ट देने वाले ! दिव्य ऐश्वर्यों के स्वामियों के द्वारा भी चिंतनीय ! आपकी जय हो |

नृसिंहवर्णनम्

जय दितिजार्तिकरान्धहर नखदंष्ट्रशितायुध विश्रुत हे
जय जय काल करालमुख ग्रसनोत्सुक विस्तृतधूम्रजटे |
जय जय भक्तप्रपोषक दैत्यभयङ्कर देवसुखप्रद हे
जय जय देव नृसिंह महाबल कोपविभूतिसमन्वित हे ||३२||

हे दिति के पुत्रों को संताप देने वाले ! हे (अज्ञानरूपी) अन्धकार का नाश करने वाले ! हे तीक्ष्ण नख एवं दांतों के ही आयुध वाले ! संसार में प्रसिद्ध कीर्ति वाले ! आपकी जय हो | हे कालरूपी ! भयंकर मुखाकृति वाले ! (दुष्टजनों का) भक्षण करने के लिये उत्सुक ! फैली हुई धूम्रवर्ण की जटाओं वाले ! आपकी जय हो | हे अपने भक्तों का पोषण करने वाले ! दैत्यों को भय प्रदान करने वाले ! देवताओं को सुख देने वाले ! आपकी जय हो | हे महान् बल से युक्त नृसिंहदेव ! क्रोधित मूर्ति से युक्त ! आपकी जय हो |

नारदवर्णनम्

जय जय नारद गानविशारद लोकविमोहन वेदनिधे
जय जय पङ्कजविष्टरमानसपुत्र प्रचेलसुवासित हे |
जय जय शैलसुताध्रुवलक्ष्यप्रदर्शक सिद्ध प्रसिद्ध गुरो
जय करुणायतनेन्द्रियनिग्रहदक्ष विपक्षसुपूजित हे ||३३||

हे नारद ! गानविद्या में कुशल ! संसार को अपनी लीलाओं से मोहित करने वाले ! वेदज्ञानरूपी धन वाले ! आपकी जय हो | हे कमल के आसन पर विराजमान (ब्रह्मदेव) के मानसपुत्र ! चन्दन के समान सुगन्धित ! आपकी जय हो | हे पार्वती एवं ध्रुव आदि को जीवन का लक्ष्य दिखाने वाले ! सिद्धियों के स्वामी ! लोक में प्रसिद्ध ! गुरुता से युक्त ! आपकी जय हो | हे करुणा के भण्डार ! इन्द्रियों को नियंत्रित करने में कुशल ! विपक्षियों के द्वारा भी सुपूजित ! आपकी जय हो |

नरनारायणवर्णनम्

जय जय धर्मप्रवाचक शस्त्रसुचालक तत्त्वगृहाश्रित हे
नरपुङ्गव जय जय नारायण बदरीमण्डित ध्यानरत |
जय जय मोहमहामदमत्सरदुर्जय योगसमाधिप्रिय
जय जय धर्मप्रियात्मज युग्मविभूतिसमन्वित लोकपते ||३४||

हे धर्म का प्रवचन करने वाले ! शस्त्रों का कुशलता से संचालन करने वाले ! तत्त्वों का आश्रय लेकर निवास करने वाले ! आपकी जय हो | हे नरश्रेष्ठ ! नारायण ! बदरीवन में स्थित ! ध्यान में लगे हुए ! आपकी जय हो | हे मोह, मद एवं मत्सर के द्वारा न जीते जाने वाले ! योग एवं समाधि के प्रिय ! आपकी जय हो | हे धर्म के प्रिय पुत्र ! सदैव युग्म (जोड़े) विग्रह में रहने वाले ! संसार के स्वामी ! आपकी जय हो |

अजितवर्णनम्

जय जय सागरमन्थननायक देवगणाधिप कामद हे
जय जय सुन्दरश्यामकलेवर चारुचतुर्भुजमण्डित हे |
जय जय हाटककुण्डलवर्मपरिश्रमस्वेदचमत्कृत हे
जय जय हेऽजित धन्य स्वनामगुणोज्ज्वल पद्मशुभानन हे ||३५||

हे समुद्रमन्थन के नायक ! देवगणों के स्वामी ! कामनाओं को पूर्ण करने वाले ! आपकी जय हो | हे सुंदर श्यामवर्ण के शरीर को धारण करने वाले ! चार आकर्षक भुजाओं से युक्त ! आपकी जय हो | हे स्वर्णनिर्मित कवच-कुण्डल एवं (समुद्रमन्थन के) परिश्रम से जन्य पसीने की बूंदों से चमकने वाले ! आपकी जय हो | हे अजित ! आप धन्य हैं | आप अपने नाम और गुणों से ही प्रकाशित हैं | आपकी मुखाकृति कमल के समान है | आपकी जय हो |

मोहिनीवर्णनम्

जय जय हे मृगलोचन दानवचित्तप्रमन्थन लास्यगते
जय जय पीनपयोधरक्षीणकटीश मनोहरहास्ययुत |
जय जय शङ्करज्ञानविलोपक मोहक कन्दुककेलिप्रिय
जय जय मोहिनीरूपधर प्रकटीकृतमायिकजाल हरे ||३६||

हे हिरण के समान नेत्रों वाले ! दानवों के चित्त को मथने वाले ! लास्ययुक्त चाल से चलने वाले ! आपकी जय हो | हे सुन्दर स्तन एवं पतली कमर के स्वामी ! मन को हरण करने वाली हंसी से युक्त ! आपकी जय हो |हे भगवान् शंकर के भी ज्ञान को लुप्त करने वाले ! उन्हें मोहित करने वाले ! गेंद से खेलने वाली क्रीडा को पसन्द करने वाले ! आपकी जय हो | हे मोहिनीरूप को धारण करने वाले ! अपनी मायाजाल को प्रकट करने वाले हरि ! आपकी जय हो |

कूर्मवर्णनम्

जय जय मन्दरधारण धर्मविरुद्धनिषूदन वीतमल
जय जय प्रस्तरपृष्ठ विशालपराक्रम श्वासप्रचारक हे |
जय जय वीवधिकाद्रिशलङ्ग सकल्पसुपूजित फुल्लमुख
जय जय कूर्म महाद्भुतकर्मकर हृदयाङ्कितविग्रह हे ||३७||

हे मन्दराचल को धारण करने वाले ! धर्मद्रोहियों का संहार करने वाले ! मलिनता से रहित ! आपकी जय हो | हे पत्थर के समान कठोर पीठ वाले ! विस्तृत पराक्रम से युक्त ! फैली हुई दीर्घ श्वास लेने वाले ! आपकी जय हो | हे पर्वतराज को अपने ऊपर ढोने वाले ! वैदिक कर्मकाण्ड के द्वारा पूजित ! प्रसन्न मुख वाले ! आपकी जय हो | हे कूर्म ! आपके कर्म महान् एवं अद्भुत हैं | आपका स्वरूप हमारे हृदय में स्थित रहे, आपकी जय हो |

धन्वन्तरिवर्णनम्

जय जय विष्णुकलामृतधारक रोगविनाशक भेषज हे
जय जननिर्गदकारण सौम्यमुखाम्बुज मन्मथविग्रह हे |
जय जय वत्सतरायुवतंस विचित्रवनस्पतिचर्चित हे
जय धन्वन्तरि जीवविकासकर द्दढप्राणसमर्धक हे ||३८||

हे विष्णु के कलावतार ! अमृत को धारण करने वाले ! रोग का विनाश करने वाले चिकित्सक ! आपकी जय हो | हे लोगों को स्वस्थ करने के निमित्त ! सौम्य मुखकमल वाले ! मन को मथित करने वाले कामदेव के समान शरीर वाले ! आपकी जय हो | हे नूतन आयु वाले बछड़े के समान कोमल एवं उर्जावान् ! विचित्र वनस्पतियों से सुशोभित ! आपकी जय हो | हे देव धन्वन्तरि ! हे आयु को बढ़ाने वाले ! प्राणशक्ति की वृद्धि करने वाले ! आपकी जय हो |

सुयज्ञवर्णनम्

जय प्रथमाख्यमनुप्रतिपालक विघ्नहरेप्सितदानकर
जय जय होमहुताशनसम्भव वैदिकमार्गप्रकाशक हे |
जय जय कर्मफलप्रतिभाजक याजककार्यप्रसाधक हे
जय जय यज्ञ तडिन्मयप्रत्यय डिङ्गरपापविनाशक हे ||३९||

हे स्वायम्भुव मनु की रक्षा करने वाले ! विघ्न का हरण करने वाले ! अभिलषित को प्रदान करने वाले ! आपकी जय हो | हे हवन की अग्नि से उत्पन्न ! वैदिक मार्ग को प्रकाशित करने वाले ! आपकी जय हो | हे कर्मफल का यथायोग्य विभाजन करने वाले ! यज्ञ करने वालों के कार्य को सिद्ध करने वाले ! आपकी जय हो | हे यज्ञ ! आपका स्वरूप विद्युत् के समान विलक्षण एवं देदीप्यमान है | आप जघन्य कर्म करने वालों के पाप को भी नष्ट कर देते हैं | आपकी जय हो |

वामनवर्णनम्

जय जय वामन मानद क्षान्त कृतान्तप्रकोप द्विजेश विभो
जय जय पादनखाग्रप्रहारविदीर्णकटाहकलेवर हे |
जय जय हे बलिराजमहाधनहारक नाकसुराज्यप्रद
जय जय काश्यप निर्जरभूपसहानुज प्राञ्जलभावित हे ||४०||

हे वामन ! मान देने वाले ! सहनशील ! यमराज के समान कोप करने वाले ! ब्राह्मणों के स्वामी एवं पालक ! आपकी जय हो | अपने चरणनख के अग्र प्रहार से ब्रह्माण्डकटाह के स्वरूप को विदीर्ण करने वाले ! आपकी जय हो | हे राजा बलि के विशाल धन का हरण करने वाले एवं उन्हें पुनः (आगामी मन्वन्तर में) स्वर्ग का उत्तम राज्य प्रदान करने वाले ! आपकी जय हो | हे कश्यप के पुत्र ! देवताओं के राजा इन्द्र की सहायता करने वाले उनके छोटे भाई ! निर्मल मन वाले ऋषियों के द्वारा ध्यातव्य ! आपकी जय हो |

परशुरामवर्णनम्

जय जय भार्गववंशप्रभाकर धर्मविरुद्धवनानल हे
जय जय पर्शुधर प्रतिकारकर त्रिपुरारिप्रियङ्कर हे |
जय जय नित्यमहेन्द्रनिवास धराप्रतिदायक शासक हे
जय जय चक्रनरेशकृतान्त महान्त प्रशान्तक भीष्मगुरो ||४१||

हे भृगुवंश के सूर्य ! धर्मविरोधरूपी वन को जलाने वाली अग्नि के समान ! आपकी जय हो | हे परशु धारण करने वाले ! अधर्म का प्रतिकार करने वाले ! त्रिपुरासुर का नाश करने वाले शिवजी का प्रिय करने वाले ! आपकी जय हो | हे महेन्द्र पर्वत पर नित्य निवास करने वाले ! पूरी पृथ्वी पर शासन करने वाले एवं उसका दान करने वाले ! आपकी जय हो | हे चक्रराज[3] (सहस्रबाहु कार्तवीर्य अर्जुन) का अन्त करने वाले ! महान् एवं शान्त ! पितामह भीष्म के गुरु ! आपकी जय हो |

---

3 चक्रावतारो हरेः - महाराज सहस्रबाहु भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्रावतार थे |

रामवर्णनम्

जय जय वारिधिसेतुकर त्रिदशार्चित धर्मधुरन्धर हे
जय जय वानरभल्लुकभृत्यसदासुखधामप्रदायक हे |
जय शिवचापप्रतोटक रावणगर्वविमस्तककारण हे
जय जय राम रमाश्रितवामललामशरीर मनोजव हे ||४२||

हे समुद्र पर पुल बनाने वाले ! देवताओं के द्वारा सेवित ! धर्म की धुरी को धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे वानर-भालू जैसे सेवकों को भी अक्षय सुखदायक साकेतधाम प्रदान करने वाले ! आपकी जय हो | हे शिवजी के धनुष को तोड़ने वाले ! रावण के अहंकाररूपी मस्तकों को नष्ट करने के हेतु ! आपकी जय हो | हे राम ! लक्ष्मी (श्रीसीता) जी के द्वारा आपका सुन्दर वामभागीय शरीर आलिंगित है | आप स्वरूप मन में चिन्तनीय और ध्यातव्य है | आपकी जय हो |

कृष्णवर्णनम्

जय जय कंसकुराज्यक्षयङ्कर शैलधराघनिषूदन हे
जय वृषभानुसुताप्रिय गोपवधूनयनांशुप्रभाकर हे |
जय जय फाल्गुनज्ञानप्रदाश्वसुचालक कैतवमानव हे
जय जय कृष्ण जपाम्यनिशं जय कृष्ण कृपां कुरु योगपते ||४३||

हे कंस के अत्याचारी शासन का नाश करने वाले ! गोवर्द्धन पर्वत को धारण करने वाले ! अघासुर आदि का संहार करने वाले ! आपकी जय हो | हे वृषभानु की पुत्री (श्रीराधिका) के प्रिय ! गोपियों के नेत्रों के लिये सूर्योदय के प्रकाश के समान ! आपकी जय हो | हे अर्जुन को ज्ञान देने वाले ! उनके अश्वों का संचालन करने वाले ! लीलापूर्वक मनुष्यरूप धारण करने वाले ! आपकी जय हो | हे कृष्ण ! आपकी जय हो | मैं 'जय कृष्ण' का जाप निरन्तर करता हूँ | हे योग के स्वामी ! आप मुझ पर कृपा करें |

व्यासवर्णनम्

जय जय दिव्यपुराणप्रवर्तक वेदविभाजक ज्ञाननिधे
जय जय ब्रह्मप्रभारत भारतकारक कारकहारक हे |
जय जय द्वीपसमुद्भव पैलसुमन्तुशुकप्रतिशिक्षक हे
जय जय व्यास विनाशितपाश प्रबोधक्रियारत विश्वगुरो ||४४||

हे दिव्य पुराणों का प्रवर्तन करने वाले ! वेदों के विभाजक ! हे ज्ञान के भण्डार ! आपकी जय हो | हे ब्रह्मतेज से प्रकाशित ! महाभारत की रचना करने वाले ! विश्वमाया का नाश करने वाले ! आपकी जय हो | हे द्वीप में उत्पन्न ! पैल, सुमन्तु एवं शुकदेव आदि को शिक्षा देने वाले ! आपकी जय हो | हे व्यास ! मोहपाश का विनाश करने वाले ! ज्ञानप्रदान की क्रिया में लगे हुए ! समस्त संसार के गुरु ! आपकी जय हो |

बुद्धवर्णनम्

जय जय काश्यप गौतम देवनताङ्घ्रि प्रशस्तजितेन्द्रिय हे
जय जय मारविमर्दक मोहविनाशक दैत्यविमोहक हे ।
जय शुद्धोदनकुलतारक जय ध्यानरत प्रतिसैनिक हे
जय जय बुद्ध प्रबुद्ध विशुद्ध प्रचारितवेदविरुद्ध हरे ॥४५॥

हे काश्यप, गौतम आदि संज्ञाओं से सम्बोधित ! देवताओं के द्वारा पूजित चरणों वाले ! प्रबल इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाले ! आपकी जय हो । हे कामदेव का मर्दन करने वाले ! मोह का नाश करने वाले ! दैत्यों को मोहित करने वाले ! आपकी जय हो । हे शुद्धोदन के कुल को तारने वाले ! ध्यान में लीन ! प्रतिसेना[4] से युक्त ! आपकी जय हो । हे प्रबुद्ध बुद्ध ! आप अत्यन्त शुद्ध हैं, आप संसार में वेदविरोधी सिद्धान्त के प्रचारक हैं । आपकी जय हो ।

4 प्रतिसेनावतार तन्त्र में दर्पण, खड्ग, आकाश, दीपक आदि को प्रतिसेना कहा गया है जिनके माध्यम से योगीजन अतीतानागत का प्रत्यक्षवत् दर्शन करते हैं ।

कल्किवर्णनम्

जय जय चण्डपराक्रम म्लेच्छविशीर्षकरासिधराश्वगते
जय जय शास्त्रप्रपोषक वर्णसमुद्धरकारण पारमिते |
जय जय धर्मदिवाकर तुङ्गयशस्कर तिष्ययुगान्तक हे
जय जय कल्किस्वरूप महाभवगर्तगतारक पाहि हरे ||४६||

हे प्रचण्ड पराक्रम से युक्त ! म्लेच्छों के मस्तकों को काटने वाले ! हाथ में तलवार धारण करने वाले ! अश्व पर आरूढ़ ! आपकी जय हो | हे शास्त्र का पोषण करने वाले ! वर्णमर्यादा के उद्धार के निमित्त ! अत्यन्त श्रेष्ठ ! आपकी जय हो | हे धर्मरूपी सूर्य ! अत्यन्त उच्चस्तरीय यश के कारण ! कलियुग का अन्त करने वाले ! आपकी जय हो | हे कल्कि का स्वरूप धारण करने वाले हरि ! घोर संसाररूपी गर्त में गिरे हुए लोगों का उद्धार करने वाले ! आपकी जय हो | आप हमारी रक्षा करें |

॥ इति श्रीनिग्रहाचार्येण श्रीभागवतानन्दगुरुणा विरचिता
महावतारस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ इस प्रकार श्रीनिग्रहाचार्य श्रीभागवतानंद गुरु के द्वारा रची गयी
महावतारस्तुति पूरी हुई ॥

श्रीत्रिपुराम्बाशाम्भवीमहाप्रपत्तिः

हिन्दी अनुवाद सहित

याकाशे निगमादिवाक्सुनमिता सृष्ट्यादिहेतुप्रभा
ब्रह्माविष्णुमहेश्वरेश्वरसदाशैवासने संस्थिता।
योगिन्यादिगणौघसेवितपदां ब्रह्माक्षराभ्यन्तरां
श्रीविद्यामहिमाल्यभूषणयुतामोङ्कारतत्त्वां नुमः ॥१॥

जो प्रकाशपुंज में स्थित वेदादि के वचनों द्वारा प्रणाम की गई हैं, पञ्चमहाप्रेत[5] के आसन पर विराजमान हैं, योगिनी आदि के गणों के समूहों के द्वारा जिनके चरणों की सेवा की गई है, ऐसी नागरूपी माला से अलंकृत, ॐकार तत्व की स्वामिनी श्रीविद्या को हम प्रणाम करते हैं।

भोगैश्वर्यप्रदानसङ्गतिरतां पुष्पेक्षुकोदण्डकां
विद्याक्षाभययोगमार्गजननीं रुद्राङ्कभागे गताम्।
चन्द्रार्धाङ्कितहैममस्तकमहामाणिक्यदेहोज्ज्वलां
श्रीविद्यां त्रिपुराम्बिकामभयदामद्वैतवीर्यां नुमः ॥२॥

जो भोग एवं ऐश्वर्य को प्रदान करने के स्वभाव वाली हैं, जो पुष्प एवं ईख के बने धनुष को धारण करती हैं, जो विद्या का ज्ञान कराने वाले अभयसंज्ञक योगमार्ग को उत्पन्न करती हैं एवं रुद्र के अंक में स्थित हैं, स्वर्ण के समान आभा वाले जिनके मस्तक में अर्द्धचन्द्र सुशोभित हैं तथा महान् माणिक्य के समान जिनके शरीर की रक्ताभा है, जो सभी लोकों की माता हैं, साधक को अभयदान देने वाली हैं, जिनके पराक्रम की तुलना किसी से नहीं हैं, उन श्रीविद्या को हम प्रणाम करते हैं।

---

5 ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर एवं सदाशिव को तन्त्रशास्त्र में पञ्चमहाप्रेत कहा गया है।

अर्देत सूक्ष्मपथगम्यमहात्मभाव -
मासक्तिदोषगतगोष्ठिचिति त्रपेध्वम्।
निष्कृष्टदेविचरणामृतनैत्यलाभे
व्रज्यास्त कां निवशदां शरणं मनुष्याः ॥३ ॥

हे मनुष्यों ! सूक्ष्म मार्ग के द्वारा जिस महान् आत्मबोध के भाव की प्राप्ति होती है, उसकी याचना करो। अपने अंदर आसक्ति आदि दोष की संगति का बोध होने पर लज्जा के भाव से युक्त बनो। अभी जो श्रीदेवी के चरणामृत का नित्य लाभ मिल रहा है, जब उससे वंचित कर दिए जाओगे, तब किस विशिष्ट अभीष्ट की सिद्धि कराने वाली के शरण में तुम्हें जाना चाहिये ? (अर्थात्, देवीकृपा से वंचितों के लिये कोई भी स्थान शरण हेतु उपयुक्त नहीं बचेगा)।

ह्नोषीमहीत्थमधुना निजपापबुद्धिं
सत्सङ्गमेन बिभियाम कुमार्गसङ्गात्।
प्राखर्यजन्यमुपदानमलोलबुद्ध्या
प्रालेयसङ्घ इव आतपचण्डकाले ॥४ ॥

हम, सत्पुरुषों की संगति के द्वारा (प्रेरित होकर) कुमार्ग के संग से डरें और दुष्टता की भावना से जन्य दुराचार हेतु उत्कोच (रिश्वत) रूपी प्रलोभन को दृढ़ मति से, साथ ही अपनी पापबुद्धि को, अब इस प्रकार से छिपा लें जैसे भीषण गर्मी के समय हिमखंड छिप जाते हैं (नष्ट हो जाते हैं या दृष्टिगोचर नहीं होते)।

प्रस्थम्पचोऽपि नितरां तव मोहकास्त्रैः
पर्वन् कुनिच्छिविविहारबलिष्णुबस्तः ।
बल्यौ तवाङ्घ्रिकमलावपि चारुहासे
त्वत्प्रेमवञ्चितजनाय बलिन्दमाय ॥५ ॥

कठोर व्रत का पालन करने वाले वानप्रस्थी तपस्वी भी तुम्हारे मोहक मायामय अस्त्रों के द्वारा बकरे के समान मोहित होकर पतित वर्णसंकरों के संसर्ग में पड़कर अपमानित गति को प्राप्त हो जाते हैं। हे मनोहर मुस्कान वाली देवि ! जो जन तुम्हारी प्रेमपूर्णता से वञ्चित हैं, वे यदि विष्णु के समान भी बलिष्ठ हों तो भी उनके लिए तुम्हारे चरणकमलों की शक्ति अधिक ही हैं (अर्थात्, तुम्हारी माया को वे नहीं जीत सकते)।

भौवादिकान्तनिधनो ह्यमुनिव्रतो यः
प्राप्तुं हिरण्यमनुमीवति सन्तलोकम् ।
मुस्तन्तमेव मुहिरं तव वासनान्यः
सम्यग्ददाति मतिमान् स मुखम्पचः स्यात् ॥६ ॥

भौतिक सुखों की लालसा में प्राण त्याग देने वाले असंयमी जन जब धनादि के लोभ से महात्माजनों के पास जाते हैं, उस समय उस संग्रहपरायण मूर्ख को जो तुम्हारे मन्दिरों का पता बता देता है, वह बुद्धिमान् ही सच्चा साधु है (अर्थात्, श्रीदेवी के मन्दिर में उपासना करने वाले को भोग के साथ साथ मोक्ष भी मिलता है, इसी उभयलाभ की कामना मतिमान् करते हैं)।

देहम्भराप्लुतधरातलभागमध्ये
सञ्चिन्तकैर्मधुरकामिनीदेहभागान्।
त्वां नान्तरीयकमतेन भजन्ति लोके
कः सम्भवेदधिकभाग्ययुतो महेशि ! ॥७॥

सुंदर स्त्रियों के शरीर का चिंतन करने वाले, मात्र उदरपोषण हेतु जीवन धारण करने वालों से भरी इस पृथ्वी में जो अनन्यभाव से आपकी आराधना करते हैं, हे महेशि ! उनसे अधिक भाग्यवान् और कौन होगा ?

यद्रावयन्ति तव नामयशोनुरक्ता -
स्तृण्वन्ति किञ्चिदपि शुष्कमशुष्कमेव।
सुन्वन्ति यत्तवमुखेन्दुनिमग्नचित्ता
वेदार्थदेवरसजह्नुसुतासमानाः ॥८॥

तुम्हारे नाम और यश के गायन में जो अनुरक्त हैं, उनके मुख से कुछ भी शब्द निकल जाए, वो मधुर या रूखा कुछ भी चख लें, आपके मुखचन्द्र के ध्यान में जिनका चित्त मग्न रहता है, उनके शरीर से कोई भी जल स्पर्श कर जाए, वे (शब्द, भोजन तथा जल, क्रमशः) वेदार्थ के समान (गूढ़), अमृत के समान (मधुर) एवं गंगाजल के समान (पवित्र) बन जाते हैं।

प्रत्युक्रमेण परिरम्भक्रियानुरक्ताः
संस्थावसंस्थितनृदेवसमूहमुख्याः ।
याभिर्विशाथप्रतिशासितयोगव्यासा -
स्ता वै मृगेन्द्रकटयस्तव पाददास्यः ॥९॥

जिनकी सुंदरता इतनी तीव्र है कि यज्ञमण्डप के स्तुति स्थान में दीक्षित होकर खड़े ऋत्विक्समूह के प्रधान भी अत्यंत बलपूर्वक उनके आलिंगन की कामना और क्रिया में अनुरक्त हो जाते हैं, जिनके द्वारा बड़े बड़े योगविस्तारक साधक भी मोहित होकर उनके द्वारपाल आदि के रूप में सेवक बनकर रहने लगते हैं, वे सिंह के समान सूक्ष्मकटिभाग वाली कामिनियां भी तुम्हारे चरणों की दासी ही बन कर रह जाती हैं।

ग्रामे वनेऽचलयुतान्तरदेवखाते
कुञ्जेऽथवायतनप्रस्रवणेषु देवि ! ।
श्रीशाम्भवीति भुवनेश्वरि जीवकाल
आकारयन्नियुतधा त्रिपुराम्बिकेति ॥१०॥

गांव में, वन में, पर्वतों में स्थित गुफाओं में, उपवनों में, मंदिर अथवा झरनों के समीप, मैं जहां भी जब तक जीवित रहूं तब तक लाखों बार हे भुवनेश्वरि ! श्रीशाम्भवी, त्रिपुराम्बिके, इस प्रकार से तुम्हें पुकारता रहूं।

नो चेत्कथञ्चन निमीलनकालमात्रे
निम्लोचकालसमये परिपोटकेन।
त्वन्नामकीर्तनपरान्न श्रृणोति किञ्चित्
किं जीवितेन सफलं खलु तस्य लोके ? ॥११ ॥

जिसने अपने जीवन के अन्तकाल में भी किसी भी प्रकार से, कर्णादि में उत्पन्न रोग के कारण पलक झपकने भर के समय के लिए भी, तुम्हारे नामसंकीर्तन में मग्न लोगों की वाणी को थोड़ा भी नहीं सुना, इस संसार में उसके जीवित रहने का क्या साफल्य हुआ ?

यस्यैकवर्णशुभवाचनमष्टसिद्धीः
सम्प्राप्यते न वदतीह निषद्वरेशि ! ।
निर्मृष्टचिन्तननिशुम्भनिशीथजीवः
पाप्मा समस्तजगतीव प्रमुग्धबुद्धिः ॥१२ ॥

जिस नाम के एक वर्ण के भी अच्छी प्रकार से उच्चारण करने पर अष्टसिद्धियों की प्राप्ति होती है, फिर भी जो व्यक्ति उसका उच्चारण नहीं करता, हे कामेश्वरि ! शुद्ध चिन्तनशीलता को नष्ट करने वाला वह, मोहित बुद्धि वाले उल्लू के समान व्यक्ति, पूरे संसार में सबसे बड़ा पापी है।

व्रीड्यन्तु माहिविकधर्मप्रपन्नसंस्था
मोक्षानुरक्तसुजनारिकुयोगवाहः ।
सोत्प्रासदृश्यमवलोकयति कृतान्त -
स्तिष्ठन् तिलित्सविथुरेश उदात्तदण्डः ॥१३ ॥

व्याभिचारिक वृत्तियों का जिन्होंने आश्रय ले रखा है, जो दुष्ट जन मोक्ष के मार्ग पर चलने वाले सज्जनों के शत्रु हैं तथा पापियों का भरण पोषण करते हैं, उन्हें लज्जा आनी चाहिए क्योंकि क्रूर राक्षस के समान विशालकाय कालसर्प कालदण्ड को उठाये हुए खड़ा रहकर उन दुष्टों के द्वारा धर्म के प्रति किये गए उपहास एवं व्यंगात्मक व्यवहार को देख देख कर हंसता रहता है।

दिव्यावदानतनुलाकृतिसृष्टिकर्त्री
स्थूला परा किमपि सूक्ष्मगता विभाज्या।
त्रैगुण्यसाम्यपरिणामविसर्गभूता
ज्ञानक्रियाजडनिमित्तविशेषणेन ॥१४॥

आप दिव्य शक्ति से युक्त होकर विस्तृत सृष्टि की रचना करने वाली हैं, जो स्थूलावस्था, परावस्था एवं कहीं कहीं सूक्ष्मावस्था में विभाजित है। ज्ञान, क्रिया एवं जड़ आदि विशेषणों से युक्त (सात्विक, राजस एवं तामस) त्रिगुणों की साम्यावस्था के परिणामस्वरूप आप सृष्टि से परे स्वरूप में स्थित रहती हैं[6]।

---

6 सर्ग सृष्टि का वाचक है तथा इसके विपरीतार्थ में विसर्ग शब्द का प्रयोग होता है। दर्शनशास्त्र के अनुसार तीनों गुणों की साम्यावस्था में किसी प्रकार की कोई उत्पत्ति नहीं होती है किंतु जब इनकी वैषम्यावस्था होती है, तो सृष्टि होती है। त्रिगुणों की साम्यावस्था मूलप्रकृति है तथा वैषम्यावस्था सृष्टि है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी गुणों एवं विकारों को प्रकृतिजन्य ही कहा गया है :- *विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान्।* तीनों गुणों में सत्वगुण ज्ञानप्रधान, रजोगुण क्रियाप्रधान एवं तमोगुण जड़प्रधान है जिनके वैषम्य से ही सांसारिक उद्बोधों का बोध होता है।

षड्चक्रराजगतबिन्दुकलात्मरूपा
स्थित्यात्मिका शरधनुःसृणिपाशहस्ता।
अन्तर्बहिस्थितरथाङ्गदशाभिधेशी
ह्येते तवाभिजनवागभिधायकास्ते ॥१५॥

मूलाधार आदि छः चक्रों के राजा (सहस्रार) में बिंदुभावस्थित सूक्ष्मरूप मूर्त्यात्मक कलारूपा, स्थूलावस्था में जब परा शक्ति प्रपञ्च रूपता को प्राप्त करके स्थूलरूप को धारण करती है, उस रूप में स्थित्यात्मिका, पुनः स्थूलावस्था को प्राप्त परा शक्ति के बाण, धनुष, अङ्कुश एवं पाशात्मक नित्यायुधों से युक्त चतुर्भुजा, अन्तःस्थित चक्रों के साथ साथ दशनामों वाले श्रीचक्रस्थित बहिश्चक्रों की स्वामिनी, ये तुम्हारे साधकों की वाणी से निकले तुम्हारे प्रति सम्बोधन हैं (अर्थात्, ये तुम्हारे विशिष्ट नाम हैं)।

शक्ती तवावरणचिह्नगता सुकेशि !
सत्यप्रवाहपरिरोधनकार्यदक्षा ।
अन्यां कुमोहजननीति वदन्ति गावो
विक्षेपिकेतरसुरूपधराघवीर्या ॥१६ ॥

हे सुंदर केशों वाली देवि ! तुम्हारी दो शक्तियां प्रसिद्ध हैं। उनमें प्रथम तो आवरण के लक्षणों से युक्त है जो साधक की बुद्धि का आच्छादन करके उसके सत्यबोध में बाधक बन जाती है। दूसरी को वेदोक्तियां कुमोह की जननी बताती हैं, जिसे विक्षेप कहते हैं। विक्षेप शक्ति सत्य के वास्तविक स्वरूप को प्रकट न करके पापसमूह के द्वारा बली होकर कुछ और ही भ्रामक तत्वों का बोध कराती है।

भूहर्म्यपार्थिवसदाश्रयसंज्ञकश्च
वृत्तत्रयेन्दुसुकलाकृतिरूपसिद्धौ ।
दिग्नागचक्रमनुकोणदशार चक्राः
संस्थापितास्तु गजकोणनिवासपूर्वे ॥१७ ॥

सबों को आश्रय देने वाले पृथ्वीतत्व से सम्बंधित भूपुर चक्र, त्रिवृत्तक चक्र, इन्दुकलाओं की संख्या (चन्द्रमा की अमासहित सोलह कलाएं हैं) वाले रूप को धारण करने वाला षोडशार चक्र, दिग्गजों की संख्या (आठ) वाला अष्टारचक्र, मनुओं की संख्या (चौदह) वाला (कोणात्मक) चतुर्दशार चक्र, इसके बाद दशारचक्र (दश कोणात्मक चक्र दो हैं, बहिर्दशार एवं अन्तर्दशार। सृष्टिक्रम के अंतर्गत भूपुर से बिंदु की ओर पहले पड़ने वाले चक्र को बहिर्दशार एवं बाद वाले को अन्तर्दशार कहते हैं), ये सभी (आठवें) अष्टकोणचक्र से पहले (समष्टि श्रीचक्र) में संस्थापित रहते हैं।

यस्मिन्त्रिकोणमगतिस्तिलपर्णिरम्यः
संसारचक्रपरिवर्तनतालुरेशः ।
यस्मिन्स्थितस्तिमिततालितलोकबुद्धि -
स्तं नौमि तापननिभं परयन्त्रराजम् ॥१८॥

जिसमें चन्दन के समान रमणीय, अगम्य त्रिकोणात्मक चक्र है, जो संसारचक्र की निरंतर परिवर्तनशीलता के लिए महान् जलावर्त के समान है, जिसमें लोगों की बुद्धि को पाशबद्ध करने की शक्ति वाला स्थिर स्वभावयुक्त (बिंदु) तत्व भी है, उस सूर्य के समान तेजस्वी परदेवता सम्बन्धी यन्त्रराज को मैं प्रणाम करता हूँ।

शक्राग्निमृत्युपतिखड्गभुजाम्बुनिष्ठै -
राकाशगम्यधननायकरुद्रदेवैः ।
ब्रह्माहिराजपरिमण्डितभूपुराग्रे
त्वामुज्जिहानतरुणीमभियाचयामि ॥१९॥

इंद्र, अग्नि, यमराज, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, रुद्र, ब्रह्मा एवं अनन्त के द्वारा जिसके (श्रीचक्र के) भूपुरबाह्य प्रदेश परिमण्डित हैं, जिसकी लावण्यता कभी मलिन नहीं होती, अपितु सर्वदा बढ़ती ही रहती है, ऐसी तुम्हारे प्रति मैं नम्र निवेदन करता हूँ।

आद्या महोज्ज्वलनिभा ह्यपरा सुरक्ता
चान्त्यासिता शिवशिवाकृतिरूपकाख्याः।
पञ्चोनसङ्ख्यकप्रवेशयुतोऽस्ति रम्यो
भूर्लोकभूपुररथाङ्गयुते नमस्ते ॥२०॥

तीनों रेखाएं अलग अलग वर्ण की हैं। बाहर से प्रथम रेखा श्वेतवर्ण की है, और दूसरी रेखा सुंदर रक्तवर्ण की है। तीसरी रेखा कृष्णवर्ण वाली है तथा तीनों रेखाएं क्रमशः परमशिव, माया एवं स्थूलजगत् का रूपक प्रस्तुत करती हैं। चारों ओर से जिसमें प्रवेशद्वार बने हुए हैं, उस पृथ्वीतत्व सम्बन्धी मनोहर भूपुरचक्र से युक्त हे देवि ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

नानास्वरूपतनुलाकृतिडामराश्च
संहारतक्षणकलाधृतजम्बुहासाः ।
संस्थापितास्तु पयसाम्पतिद्वारमध्ये
योगिन्य एधितकुचा इलिकान्तवीर्याः ॥२१ ॥

विशाल आकृति वाली, अनेकों भयावह रूपों को धारण करने वाली योगिनियां, जिनके स्तन विस्तृत एवं बेडौल हैं, जो गीदड़ के समान गर्जना करने वाली, संहार एवं मारकाट में दक्ष हैं तथा जिनके पराक्रम में सम्पूर्ण भूमण्डल के विनाश की क्षमता है, वे (यन्त्रराज-भूपुर के) पश्चिमवर्ती द्वार पर नियुक्त रहती हैं।

नीलाञ्जनाभसमदेहधरो करालः
शूलासिमानवकपालत्रिनेत्रयुक्तः ।
षड्बाहुसंयुतप्रशस्तिरपासुदक्षः
श्रीक्षेत्रपो विजयते पुरुहूतक्षेत्रे ॥२२ ॥

जो कराल देव नीलवर्ण के सुरमे के समान आभा वाले शरीर को धारण करते हैं, जो शूल, खड्ग, नरमुण्ड आदि को धारण करते हैं एवं त्रिनेत्र से युक्त हैं, जिनकी कीर्ति उनके छः भुजाओं से किये गए हिंसात्मक कर्मों से विस्तार को प्राप्त कर रही है, वे क्षेत्रपाल (यन्त्रराज-भूपुर के) पूर्ववर्ती द्वार में विजयमुद्रा के साथ सुशोभित हो रहे हैं।

पाशाङ्कुशौ परिदधन्सविशालतुण्डो
नीलाद्रिसन्निभकलेवरमावहञ्च।
प्रश्चोतकश्च निगमान्तप्रसव्यहेतो -
र्याम्यां स्थितस्स भगवान् गणनायकाख्यः ॥२३॥

हाथों में पाश और अङ्कुश धारण करके, विशाल सूंड़ से युक्त, नीले पर्वत के समान देह को धारण करते हुए, वेदविरुद्ध आचरण करने वालों को नष्ट करने वाले भगवान्, जिनका नाम गणनायक है, वे (भूपुर के) दक्षिणवर्ती द्वार में स्थित हैं।

इर्वारुतुल्यमथितास्तमसः पुमांसो
डिम्भाहवापसनदक्ष इनीशसाध्यः।
यस्योपमा न च भवेदुपसंयमस्य
स भैरवः प्रभसकीर्तिसदोत्तरेशः ॥२४॥

जो पापी जनों के शरीर को ककड़ी की भांति सरलता से विदीर्ण कर देते हैं, अधर्म के पक्ष से लड़ने वालों का संहार करने वाले पराक्रमियों के जो इष्टदेव हैं, जिनके प्रलयंकारी कर्मों की तुलना किसी से नहीं हो सकती, ऐसे प्रचण्ड कीर्ति वाले श्रीभैरवदेव (यन्त्रराज-भूपुर के) उत्तरवर्ती द्वार के स्वामी हैं।

स्वर्णोर्मिकातरणिलज्जितसुप्रभाय
निःशेषसद्द्विषदसंशयनिर्दयाय।
तस्मै सुभद्रश्रवसे महते नमस्ते
यन्त्राय गाथश्रवसे परदेवतायाः ॥२५॥

जिनकी स्वर्णिम आभा से सूर्य भी लज्जित हो जाते हैं, जो सन्तों से वैर करने वाले सभी दुष्टों को निःसंदेह ही कठोर दण्ड देते हैं, जिनकी महान् कीर्ति सभी ओर व्याप्त है, उन वरेण्य स्तुतियों से स्तुत्य आप परदेवता के यन्त्र को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्यामाननामसितवस्त्रसमावृताञ्च
नीलाश्वपृष्ठगतरक्तमृणालनेत्राम्।
नैर्ऋत्यकोणपरिधौ पशुमोहदक्षां
नौमीड्यरूपकुशलाञ्च तिरस्करीशाम् ॥२६॥

जो श्यामवर्ण के मुख वाली हैं, नीले वस्त्रों को धारण करती हैं, नीले रंग के घोड़े पर सवार हैं और रक्तवर्ण के कमल के समान जिनके नेत्र हैं, पशुओं[7] को मोहित करने में निपुण, प्रशंसनीय रूप को धारण करने वाली तिरस्करी नाम वाली ईश्वरी, जो नैर्ऋत्यकोण में निवास करती हैं, उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ।

---

7 तन्त्रमार्ग में भय, घृणा, लज्जा, जुगुप्सा, जात्यभिमान आदि अष्टपाशों का वर्णन है, उनसे आबद्ध जीवसामान्यों की पशु संज्ञा है।

श्यामाङ्गखेटकरथाङ्गकृपाणहस्तां
स्मेराननामतुलरत्नविचित्रभूषाम्।
आग्नेयकोणपरिमण्डितचन्द्रचूडां
दुर्गामरण्यभवनां सततं स्मरामि ॥२७॥

श्यामवर्ण के अङ्गों से युक्त, हाथों में ढाल, चक्र तथा तलवार को धारण करने वाली, प्रसन्नमुखी, अतुल्य और विचित्र रत्नों से बने आभूषणों से युक्त, आग्नेयकोण में स्थित रहने वाली, मस्तक पर चन्द्रमा को धारण करने वाली वनदुर्गा को मैं सदैव स्मरण करता रहता हूँ।

शम्भो रुषा ज्वलितदेहधरो रतीशः
प्राप्तुं परिष्कृततनुं शरणञ्च देव्याः।
लब्ध्वा पुनश्च सविलासनशक्तिदेह -
मीशानसंस्थितप्रकर्षविहारदक्षः ॥२८॥

शिव जी के क्रोध से भस्मीभूत हुए देह को पुनः सुनिर्मित रूप में प्राप्त करने के लिए रतिपति कामदेव श्रीदेवी के शरण में गए थे और उन्होंने पुनः रमणकारिणी शक्तियों से युक्त नवीन देह को प्राप्त भी किया, ऐसे उत्कृष्ट विहार में दक्ष कामदेव श्रीदेवी - चक्रराज के ईशानकोण में स्थित रहते हैं।

श्रीशारदीयद्विजराजविशिष्टशुभ्र -
मिच्छावतीयुवतिसङ्गनियुद्धहेतुम् ।
सौगन्धवर्षणमनोज्ञज्वराभिधानं
वायव्यसंस्थितवसन्तमनुश्रयामि ॥२९॥

जिनकी उज्ज्वलता और ऐश्वर्य शरत्कालीन चन्द्रमा से भी अधिक है, जो रमणोत्सुका युवतियों के मध्य (प्रणयसम्बद्ध) द्वंद्व का कारण बन जाते हैं, जो सौरभिक वातावरण का निर्माण करते हुए कामजन्य ज्वर को बढ़ाते हैं, ऐसे वायव्यकोणस्थित वसन्त की मैं सेवा करता हूँ।

शुभ्रौ महाम्बुतनयौ निधिसंज्ञकौ
चापाचीप्रवेशपरिबृंहितकुब्जकेशी।
यक्षेशद्वारविभवाश्रितसिद्धलक्ष्मीः
श्रीचक्रराजभवने सकला नियुक्ताः ॥३०॥

जो निधिकुल के सदस्य हैं एवं दिव्य जल की संतान हैं (शंख एवं पद्म नामक निधियां), श्रीचक्र के पश्चिम दिशा की द्वारनायिका कुब्जकेशी हैं, तथा यक्षराज कुबेर के द्वार (उत्तरवर्ती द्वार) की नायिका सिद्धलक्ष्मी हैं, ये सभी श्रीचक्रराज के भवन में (यथावर्णित स्थानों में) नियुक्त हैं।

यन्मायया निरयणाश्रितनिष्कधर्ता
निर्याचने निबधिताडननिर्भजेच्छुः ।
भूत्वा प्रतिष्कनिवदन्यमना तथेट्टे
तामुन्मनीमुदयद्वारगतां नमामि ॥३१ ॥

जिसकी माया से मोहित होकर इस संसारचक्र में फंसे हुए बड़े बड़े धनी भी अवसादग्रस्त होकर इससे छूटने के लिए अपने मस्तक को पीटने लगते हैं, आत्मबल को त्याग कर संघर्ष का मार्ग छोड़ देते हैं और अंत में स्तुति करने लगते हैं, उस पूर्वद्वार की नायिका उन्मनी को मैं प्रणाम करता हूँ।

निर्णीतस्वर्गद्रुपदां दिवि धावमानां
सद्भक्तपूजितपदां बलिदातिवाराम् ।
निर्हस्तमृत्युमपवादनदक्षिणेशीं
श्रीकालिकाङ्घ्रिशरणं नियतं सदेरे ॥३२ ॥

जो सम्पूर्ण स्वर्गलोक को अपने चरणों के नीचे रखती हैं, महाकाश में विचरण करती हैं, जिनके चरण सद्भक्तों के द्वारा पूजित हैं एवं जो भावपूर्वक दी गयी बलि को स्नेहयुक्त होकर स्वीकार करती हैं, दुर्बल जनों की मृत्यु को टालने में समर्थ, दक्षिणवर्ती द्वार की नायिका, उन कालिका के चरणों की शरण में मैं अपनी दृढ़ गति को स्थापित करता हूँ।

आद्याणिमा च गरिमा लघिमा तथैव
सिद्धिप्रदा च महिमा जगति प्रसिद्धा।
ईशित्वसिद्धियुतभूतिवशित्वनामा
प्राकाम्यसर्वखचितेप्सितप्राप्तिकाम्याः ॥३३ ॥

एताः समस्तविभवाः सकलार्थसिद्धि -
साहाय्यसन्निधियुताः समहाङ्कुशाब्जाः ।
रेखाङ्कगूढ़नियमा रविभासमाना -
स्तिष्ठन्ति भुक्तिमतयस्तव भूपुरेऽस्मिन् ॥३४ ॥

सबसे पहले अणिमा, गरिमा और लघिमा, सबों को सिद्धि देने वाली जगत्प्रसिद्ध महिमा, ईशित्व सिद्धि के साथ वशित्व नाम की सिद्धि, प्राकाम्य, सर्वभुक्ति, इच्छा तथा प्राप्ति नाम वाली समस्त सिद्धियां सर्वार्थसिद्धि नामक सिद्धि के साथ अपने हाथों में पाश एवं कमल धारण किये हुए, सूर्य के समान वर्ण वाली होकर सबों की इच्छाओं को पूर्ण करने की इच्छा से तुम्हारे इस भूपुर की रेखाओं में गूढ़भाव से निवास करती हैं।

चक्षुष्मती चिकितुषी विकला जरूथा
व्राधन्तमा विकसुकोज्ज्वलरश्मियुक्ता।
ब्रह्माण्डजल्गुलप्रिया गिरिमाणवीना
हे चक्षदाननिपुणे ! तव नाममाल्यः ॥३५॥

तुम सम्पूर्ण संसार की सभी गतिविधियों को देखने वाली हो, सभी बातों को जानने वाली हो, तुम गुणातीत भाव में लीन रहने वाली, सबों को अपनी इच्छा मात्र से नष्ट करने वाली, नित्य वृद्धि को प्राप्त होने वाली, विशेषरूप से प्रकाशमान् रहने वाली विराट् ऊर्जा की रश्मियों से युक्त हो। आप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जिनका घर है, ऐसे सर्वव्यापी ब्रह्म की प्रिया और पर्वतराज की बालिका[8] के समान हैं। हे शासन करने में समर्थ देवि ! उपर्युक्त सभी शब्द एवं सम्बोधन आपकी नाममाला के अंश हैं।

---

8 वैसे तो श्रीदेवी जगज्जननी हैं किंतु लीलापूर्वक हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में अवतार ग्रहण किया।

सञ्चक्षथीरधपराक्रमव्रातसाहे
रक्षाम्मियेध्यवरदा तुविमन्युधीरा।
विश्वन्मिवा प्रणतकष्टविखादनिष्ठा
त्वां विश्ववारगृहिणीमनिशं भजामि ॥३६ ॥

हे शासकों के भी शासकों के पराक्रमतुल्य समूहों को नष्ट करने में समर्थ देवि ! हमारी रक्षा करो। तुम यज्ञों के माध्यम से तुम्हारा यजन करने वाले जनों को अभीष्ट वरदान देती हो। तुम अत्यन्त क्रोध एवं ज्ञान से परिपूर्ण हो। तुम ही सारे जगत् को चलाने वाली गतिशील शक्ति एवं अपने शरणागतों के कष्ट को छिन्न भिन्न करने के स्वभाव वाली हो, जो संसार की अनेकों प्रकार से रचना करने वाले परमेश्वर की अर्द्धाङ्गिनी हैं, ऐसी तुम्हारी मैं निरंतर सेवा करता हूँ।

पञ्चान् सुपञ्चक्षितिजानुभये रभिष्ठा
रम्जासि दुर्मदजनानचितानचक्रान्।
धर्मक्षयङ्करनिकारणहेतुमुख्या
मक्षुङ्गमा वसुधिती रशनायमाना ॥३७ ॥

हे देवि ! अपने धन को भोग प्रधान पापों या विलासों में लगाने वाले विलासी जनों को, चाहे वो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अथवा निषाद ही क्यों न हो, उसे धर्म और अधर्म के भ्रम में उलझा कर रखती हो, साथ ही मोहबुद्धि वाले अकर्मण्यता से ग्रस्त अहंकारी जनों के ऊपर नियंत्रण रखती हो। जो धर्म की हानि करते हैं, उन्हें तुम बारम्बार नारकीय योनियों में भ्रमण कराती हो, अत्यन्त वेग से संचरण करने वाली हो, आकाश एवं पृथ्वी के रूप में पदार्थों को धारण करती हो एवं तुम्हारी परम्परा, तुम्हारा शासन अनादि एवं प्राचीनतम है।

विभ्रान्तविम्बटवियातव्यवायसूर्णा
आजौ विमातृफणितल्पगचक्रभुक्ताः।
पश्चादपीशहृदयेश्वरि विप्रलापे
सम्मोहितास्तव विमानवराटबद्धा: ॥३८॥

अत्यन्त भ्रम के कारण, राई के समान लघु कलेवर एवं लघु पराक्रम को प्राप्त, फिर भी धूर्तता को न त्यागने वाले लोग, जिनके शरीर क्षत विक्षत होकर युद्धभूमि में अपनी सौतेली माता[9] से उत्पन्न सर्प पर सोने वाले (अथवा सर्प पर सोने वाले, अपने सौतेले भाई) के चक्र के आहार बन जाते हैं, अर्थात् मारे जाते हैं। उसके बाद भी उनकी बुद्धि निर्मल नहीं होती, क्योंकि हे शिव जी के हृदय की स्वामिनी ! तुम्हारे अपमान के कारण उत्पन्न मोहपाश में बंधे उन (असुरों) का मन सदैव सम्मोहित होकर आपसी झगड़ों में ही लगा रहता है।

---

9 कश्यप जी की दिति नाम वाली पत्नी से दैत्यों की उत्पत्ति हुई है, कद्रू नाम की पत्नी से शेषनाग का प्रादुर्भाव हुआ है एवं वामनावतार के समान भगवान् विष्णु ने कश्यप की अदिति नाम की पत्नी से अवतार लिया, अतएव भगवान् अनन्त एवं श्रीहरि, दोनों ही दैत्यों के सौतेले भाई के समान हैं।

त्वत्प्रेमजन्यमिहिराणकराग्रलीला -
सङ्क्षोभकारणपयोधरवर्कराटम्।
दृष्ट्वान्तकाग्निदहनोत्सुकधावमाना
माहिष्यशुम्भवृकदुर्गमभण्डसंज्ञाः ॥३९॥

तुम्हारे प्रेम के कारण मथित चित्त वाले शिव जी के हाथों की लीला से जन्य स्तनों में आलोकित नखक्षत को देखकर साक्षात् कालरूपी अग्नि में भस्म हो जाने की इच्छा लिए हुए महिषासुर, शुम्भ, भस्मासुर, दुर्गम और भण्डासुर जैसे अनेकानेक दैत्य कूद पड़े।

काकच्छदेक्षणविदग्धविदग्धकामः
स्मृत्वा हिरण्यकशिपूर्मिधरां त्वदीयाम्।
तेपेऽसिताञ्चलगिरौ भवदीयकामो
जाने न कामदहनेन विशिष्टलाभम्॥४०॥

आपको स्वर्णाभा से युक्त कलेवर और वस्त्रों में देखकर तथा आपके खंजन पक्षी के समान नेत्रों से सञ्चालित प्रेमपूर्ण कटाक्ष से कामदेव का दहन करने वाले शिव जी स्वयं ही कामदग्ध हो गए। इस प्रकार बार बार आपका चिंतन करके उन्होंने आपको प्राप्त करने की कामना से नीलांचल पर्वत[10] में तपस्या की। अतएव कामदेव को दग्ध करके उन्हें कौन से विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हुई, यह मैं नहीं जान पाता।

10 यह स्थान कामाख्या पीठ में कामेश्वर महादेव की गुफा के नाम से प्रसिद्ध है तथा इस घटना का वर्णन कालिका उपपुराण एवं महाभागवताख्य देवी उपपुराण में मिलता है।

श्येनीपती भुवनशेरभशेव्यशेवा
शुष्मिन्तमा शतदुरा खलु शूरपत्नी।
श्रुष्टीवरी शिशुमती शिशुमाररूपा
रक्षोहणा भवतु लोमशवक्षणेशा ॥४१॥

हे देवि ! तुम विविध वर्णों की स्वामिनी प्रकृति हो, तुम संसार को नष्ट करने वाले परमेश्वर की कल्याणमयी प्रिया हो, तुम्हारा ताप और तेज समस्त जनों से अधिक है, तुम ही सैकड़ों आवरणों वाली शक्ति हो और निश्चित ही तुम शूरवीर पुरुषों का पालन करने वाली हो। तुम अपने भक्तों के लिए सुखदायिनी हो, संसाररूपी सन्तान की माता और धर्मोल्लंघन करने वाले शत्रुओं को मारने वाली हो (अथवा सभी नक्षत्र एवं ग्रहों में व्याप्त हो), पार्श्वभाग में सुंदर क्षुद्र रोमावली से युक्त नायिकाओं की स्वामिनी, हे देवि ! तुम हमारे लिए रक्षा करने वाली बनो।

वाञ्छामनोज्ञलिबुजा भुवि मेनकाख्या
शग्धि युधानविजये युतके तथैव।
वोचे द्युभक्तदयिते ! तव पाशबद्धो
नामानि श्रीरिति महीति तथेश्वरीति ॥४२ ॥

मन में उत्पन्न समस्त इच्छाओं को पूरा करने के लिए तुम कल्पवल्ली के समान हो, संसार में मेनका [11], इस नाम से तुम्हारी प्रसिद्धि है, तुम वीरों के मध्य युद्ध एवं सन्धि कराने में समर्थ हो। अनन्तकाल तक उपभोग किये जाने वाले दिव्य ऐश्वर्य से युक्त हे देवि ! तुम्हारे मायापाश में बद्ध हुआ मैं, तुम्हारे श्री, मही, ईश्वरी आदि संज्ञा-विशेषणों से युक्त नामों का उच्चारण करता हूँ।

11 जिसकी बात सभी मानें, विद्वानों की उस सभाशक्ति को मेनका कहते हैं।

वेश्यानिषेवणरतेन सदा सुसेव्या
चञ्चूर्यते च असती कुलटा तथैव।
देवीमहो न भजतीह कुले निमग्नां
सत्तापरिष्कृतनिभां खलु वेश्यदात्रीम् ॥४३ ॥

वेश्यारमण में रत रहने वाले लोगों के लिए पातिव्रत्य से रहित कुलटा ही सदैव सेवनीया एवं गमनीया है। अहो ! (आगमशास्त्र में वर्णित) कुल में निमग्न रहने वाली कुलटा, किसी की भी सत्ता से निर्मुक्त रहने वाली असती और निश्चय ही मोक्ष देने वाली वेश्यासंज्ञिका देवी की उपासना क्यों नहीं करते ?[12]

---

12 कुलार्णव तन्त्र के अनुसार कुण्डलिनी शक्ति की कुल संज्ञा है, उसमें रहने वाली गूढ़भावगत कुलटा, षडाम्नाय तन्त्र के अनुसार किसी के भी शासन से परे गूढ़भावगत असती एवं महानिर्वाण तन्त्र के अनुसार वेश्य, अर्थात् मोक्ष देने वाली शक्ति ही गूढ़भावगत वेश्या है।

शिक्षानरस्तपति वाजजितः पुमांस -
स्तैर्वाजयन्त वृषमण्यव एतदेव।
येषामहो न मनसीति वसोः कबन्धे !
संस्थापितस्तु सुभगे ! तव सुप्रवासः ॥४४॥

हे जीवनीय शक्ति को धारण करने वाली ज्ञानमयी सुन्दरि ! जिनके मन में तुम्हारा स्थायी निवास नहीं है, (जो आपके चिन्तन मनन से रहित हैं) उनके द्वारा बड़े बड़े आचार्यजन भी अत्यन्त कष्ट पाते रहते हैं, विकराल संग्रामों को जीतने वाले योद्धागणों एवं निरंतर साधना में लीन योगिजनों की भी यही गति होती है (वे भी उसके द्वारा कष्ट पाते रहते हैं, अर्थात् आपके चिन्तन से रहित व्यक्ति सदैव अधर्म ही करता है)।

त्वं वैष्णवी रदितमुण्डितरध्रचोदा -
स्त्वं रन्धिचित्तपरमा महती वसूया।
त्वं मेधसातिविजया मृडयाकुजाया
त्वां विश्वमोहनकरीं शरणं प्रपद्ये ॥४५॥

तुम श्रीहरि की आत्मशक्ति हो (अथवा परस्पर एकता एवं संगति कारिणी राष्ट्रनीति रूप विशाल वाणी हो), तुम्हारे मधुर मुखमण्डल में भगवान् शिव के द्वारा उत्पन्न दन्तक्षत आलोकित हैं, तुम ऐश्वर्यवान् पुरुषों को भी प्रेरणा देने वाली और आगे आये बाधक हिंसक विघ्नों को दूर करने वाली हो। तुम ही परमतत्व की स्वामिनी, दयामयी एवं सबसे महान् हो। तुम ही प्राणशक्ति, प्रजाशक्ति, ऐश्वर्यशक्ति, एवं ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों के लिए उत्तम लोकों में निवास के कामना की प्रेरिका हो। तुम संग्रामों में सदैव अपराजित रहती हो, शिव जी की अत्यंत प्रिय भार्या हो, ऐसी विश्व को सम्मोहित करने वाली, तुम्हारी मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

अग्रेगमादिपुरुषं तु मदीयमीक्षे
मर्माविधस्तु भृतिहीन इहेह मल्बः।
ईक्षे च देव्यमिनती स्वयमेवकर्त्रि !
आण्डीकलोकनिलये ! महदण्डगर्भे ! ॥४६॥

सभी तत्वों के नायक (चौबीसों तत्व का नायक आत्मा है) जो आदिपुरुष है, ऐसे मेरे आत्मा को मैं (तुम्हारे मायापाश के कारण) क्षत विक्षत देखता हूँ, इसी शरीर में संसाधनहीन और मलिन स्वभाव वाला देखता हूँ। हे कमलों से बने लोक में निवास करने वाली ! हे ब्रह्माण्ड को अपने उदर में धारण करने वाली ! हे स्वयं से ही स्वयं का प्राकट्य करने वाली ! अब तुम ही मेरी स्वामिनी हो, मेरा विनाश न होने देती हुई मेरी रक्षा करो।

लोके सुशिष्टिसुषदे ! वृषणा सबन्धू
रूपाणि सन्ति युवयोर्वृषनाभिधर्ता।
वेदाननो वृषभवाहन इन्द्रसंज्ञा
अन्ये सुमारुतवृषाकपयस्तथैव ॥४७ ॥

हे उत्तम शासन करने वाली एवं शरणागतों को सुख देने वाली ! तुम्हारे दोनों रूप (ब्रह्म और प्रकृति) आपस में श्रेष्ठ आचरण करने वाले शाश्वत दम्पति हैं, बलवान् संतानों के सेचक हैं, इस संसार में तुम्हारे ही रूप प्रतिभासित होते हैं, चाहे वो दृढ़ चक्र को धारण करने वाले विष्णु के रूप में हो, वेदों को प्रकाशित करने वाले ब्रह्मा अथवा नंदीश्वर पर आरूढ़ होने वाले महादेव के रूप में हो। इनके अतिरिक्त भी इन्द्रादि अन्य सभी उत्तम वीरों के गण, जो इस जगत् को संचालित करते हैं, उनमें भी तुम ही प्रकाशित होती हो।

उड्डीशडामरकुलागमशास्त्रमुख्यै -
रराधिता हरिहरात्मकसूत्रसङ्घैः ।
ब्रह्माख्यसूत्रनिजशक्तिसुदर्शनेन
सम्पादिता निखिलविश्वप्रसूरनिन्द्ये ॥४८ ॥

उड्डीश, डामर और कुलागम के मुख्य शास्त्रों के द्वारा, शिवसूत्र एवं विष्णुसूत्रसमूहों के द्वारा तुम्हारी आराधना की गई है। हे अनिन्द्ये ! हे सम्पूर्ण संसार को उत्पन्न करने वाली ! शक्तिदर्शन सूत्र, जिसे ब्रह्मसूत्र भी कहते हैं, उसके द्वारा तुम्हारे रूप का प्रतिपादन किया गया है।

श्रीनाथवक्रपरिनिर्गतस्वात्मसूत्रे
प्रेमाप्लुते तु त्रिपुरागमप्रेमसूत्रे।
सर्वादिकान्तनिधने तव चित्रवर्णा
आनन्दवर्णमभयङ्करमीयमानाः ॥४९ ॥

श्रीनाथ के मुख से निकले हुए आत्मसूत्र में, त्रिपुरातन्त्रराजरूपी प्रेमपूर्ण प्रेमसूत्र में, यहां तक कि सबों की उत्पत्ति से लेकर संहार पर्यन्त तुम्हारे ही अद्भुत चरित्र, आनन्दरूप और अभयदायक स्वरूप में मापे जाते हैं।

शक्तिब्रह्ममुकुन्दरुद्रकथिते सद्यामले योपने
सद्रूपे त्रिगुणात्मके रघुगतौ सामे सुगानान्विते।
रौद्रे यो रजसस्पतिः सुकथितस्त्वां तेन सन्धानितां
यो जानाति वरिष्ठवर्चिपुरुषो विवृत्तको रण्यवाक् ॥५० ॥

शक्ति, ब्रह्म, विष्णु एवं रुद्र प्रोक्त सर्व मोहनकारी सात्विक यामलसंज्ञक ग्रंथों में क्रमशः आत्मतत्व के वर्णन में, त्रिगुणात्मक विकार के प्रसङ्ग में, सुन्दर गान से युक्त धीमी गति से युक्त साम मन्त्रों में, रुद्रयामल आदि में भी जिसे समस्त लोकों के पालक के नाम से कहा गया है, उस (परब्रह्म) के साथ जो आपको नित्य जुड़ा हुआ जानता है, (शिव और शक्ति के मध्य अभेद देखता है) वही श्रेष्ठ तेजस्विता वाला है, वही संसार की घटनाओं को नियंत्रित करने की सिद्धि से युक्त होता है, वही तत्वज्ञानी पुरुष है।

॥ इति श्रीनिग्रहाचार्येण श्रीभागवतानन्दगुरुणा विरचिता
श्रीत्रिपुराम्बाशाम्भवीमहाप्रपत्तिः सम्पूर्णा ॥

॥ इस प्रकार श्रीनिग्रहाचार्य श्रीभागवतानंद गुरु के द्वारा रची गयी
श्रीत्रिपुराम्बाशाम्भवीमहाप्रपत्ति पूरी हुई ॥

--*